॥ श्री ॥

ढलती फिरती छाया नाटक

(मारवाडी बोलीमें)

बालविवाह नाटक, वृद्धविवाह नाटक, एक मारवाडीकी बात,
एक मारवाडीको घटना, स्कूलमें मारवाडी सीठनोकी
बुराई, जसरापुरका वृत्तान्त आदि पुस्तकोंके
रचियता अग्रवंशी वैश्य

जसरापुर निवासी

बाबू भगवतीप्रसादजी दारूका

लिखित

तथा

रामलाल नेमाणी

अध्यक्ष "रामप्रेस" द्वारा प्रकाशित।



कलकत्ता नं० ५८ काटन ष्ट्रीट "रामप्रेस"में
शिवप्रसाद नेमाणी द्वारा मुद्रित।
संन् १९१९

पहलीवार। मूल्य ॥=)

समयकी बात है !

सब दिन होत न एक समान ।

इक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, संपति मेरु समान ।
इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत, अम्बर हरत मशान ॥
सब दिन० ॥ १ ॥

इक दिन दुलहा बनत बराती, चहु दिश उडत निशान ।
इक दिन डेरा होत जंगलमें, कर सूधे पग तान ॥
सब दिन० ॥ २ ॥

इक दिन सीता रुदन करत है, महा विपिन उद्यान ।
इक दिन रामचन्द्र मिल, दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥
सब दिन० ॥ ३ ॥

इक दिन राजा राज युधिष्ठर, अनुचर श्रीभगवान ।
इक दिन द्रौपदी नग्न होत है, चीर दुशासनतान ॥
सब दिन० ॥ ४ ॥

प्रगटत है पूरबकी करनी तजमन सोच अजान ।
सूरदास गुण कहँलग बरणै विधिके अंक प्रमान ॥
सब दिन० ॥ ५ ॥

फैलां पोतकी बात।

आजकल आपणे लोगामें कोई कोई धनवान आदमी निरधन आदमियानें भोत नीची निगाहसें देखण लाग गया है। उनके मनमें यो अभिमान हो गयो है कि, म्हे बडा आदमी छोटा आदमियासे बात करता के चोखा लागागा। म्हे अकलमन्द और ईमानदार हा। छोटा आदमी मूरख और वेईमान है।

या वी एक परमात्माकी माया है कि, आदमी जद भागवानसें कंगाल हो ज्यावे है, जिकेई दिन मूरखता और वेईमानो ऊंका घरमें जलम ले लेवें है और जद आदमी कंगालसे भागवान हो ज्यावे है तो मत्तेई ऊंने सगला जणा हुसियार और ईमानदार कहणे लग ज्यावें है। पण वे महात्मा बडा बाबु जिका गरीबी हालत आछीतरा भोग चुक्या है तथा आपका पेटमें आछीतरा जाण चुक्या है कि, आदमीको ढलती फिरती छाया है। जिका या वी आछीतरा जाणे है कि "दिननके फेरसे सुमेरु होत माटीको" "सब दिन होत न एक समान।" जिकाई बढ़ियाका बाबा, बडा बडा घमडाके सहारे ऊंची २ गद्दियापर बेठकर, घमडका घोडा पर सवार हो, गरीब आदमियाने घृणाकी दृष्टीसे देखण लाग ज्यावे है। सेखीको चश्मो चढाकर, कटाचका बाण फेकण

लाग ज्यावें है। कन्ने श्रायोडा गरीब श्रादमीने अपमानित तथा लज्जित करण लाग ज्यावें हैं। या कितणी अचरज और अन्यायकी बात है।

आजकल या बी बात भोत जगा देखी गई है कि, गरीब आदमी बडे आदमीकै पास कोई कामकै ताई चल्यो जावै तो भागवान आदमी मनमें जाणै कि यो कांगाल मेरे पास क्यु आगयो। ऊँके पास बैठणसे आपणी आबरू हलकी होय है, सो आपणें कन्नें यो कोई सुरतसें नई आवे तो चोखो। जिकामें इसी २ खुनस निकालणे लाग ज्यावे सो वो आपई उठकर चल्यो जावें। आगाने ऊकै पास जाण कोगोई कोनी रवे।

देश दिशावरमें गरीब आदमी भगवान आदमी कन्नें कोई रुजगार भिवारकै ताई चल्यो जावे तो आसरो दीण तो दूर रिह्यो, उल्टो कोई ना कोई आटो लगाकर जठेताई बस पूचे ऊंने गावमा से निकालणकी चेष्टा करण लाग ज्यावें। या कितणी अनुचित बात है!

ऊँ पर या बात नई है कि, सगलाई भागवान इसाई है। ससारमें इसा २ धनवान, उदारचित्त, दयावान मिनख पड्या है कि, वे सबने एक निगाहसें देखें हैं। गरव गूमान जांयकै लेस मात्र भी नई है। गरीब आदमियाकी सहायतामें रातदिन लग्या रवे है। परोपकारने आपको मुख्य धर्म समझे है।

-

आज यो "ढलती फिरती छाया नाटक" ऊ ई आदमियाने चेत कराणेके ताई बणायो गयो है जिका आख होता आस्ता आन्दा हो रिह्या है। अेंको सगली बात मनसें जचाकर वर्त्तमान दशापर लिखी गई है। कोई के ऊपर खास तौरसें नही लिखी गई है सो कोई आदमी आपके ऊपरको झूठो भेम मत करियो।

अेंके पैला वृद्धविवाह नाटक, बालविवाह नाटक में मारवाडी बोलीमें बणाया था। ऊ नाटकाको चोखो आदर देखकर, यो नाटक बी मारवाडी बोलीमें बणायो गयो है। आशा है कि, ऊ ई माफक आप लोग अेंको बी आदर कर कर मेरो उत्साह बढावोगा।

अें नाटकने पढकर, धनका मदमें चूर हुयोडा, गरीबाने नीची निगाहसें देखणेवाला, आपकी भूलने मजुर करता हुया, अें भारी दोषने दूर करेंगा तथा गरीबांने आच्छो निगाहसे देखेगा और उनको भलाईको ख्याल रखेगा तो में मेरा परिश्रमने सुफल समजुगो।

कलकत्ता
सं० १९७६

सज्जनोंको दास—
भगवतीप्रसाद दारूको ।

अैनाटक मांयला आदमियांका नाम ।

१	गोपीराम	परोपकारी वाणियु ।
२	लिछमी	गोपीरामकी लुगाई ।
३	मुरली	गोपीरामको वेटो ।
४	मोजीराम	मसखरो वामण ।
५	सेवाराम	साधारण सेठ ।
६	घीशाराम	छटवो वाणियु' ।
७	जुहारमल	तामडेती पण्डित ।
८	भूरो	ऊंटवाल वामण ।
९	नैणसुख	साधारण वाणियु ।
१०	रामलो	वाणियाको छोरो ।
११	शिवदत्तसिङ्ग	ध्योडीको जमादार ।
१२	भेवली	करकसा वणियाणी ।
१३	भोलाराम	एक गद्दीको मालिक ।
१४	शिवकुमार	पूरवियो पण्डित ।
१५	मगतूराम	राडियो वाणियु' ।
१६	रामप्रसाद	गोपीरामको रोकडियो ।
१७	रगलाल	कपडाको दुकान्दार ।
१८	घमडीलाल	घमडी सेठ ।
१९	मोतीलाल	घमडीलालको मुनीम ।



श्रीभगवती प्रसाद दारुका ।

मालिक है ऊं'की तो आसरोई है। पण वा कह्वा वारे है—"मोर नाचे नाचे पण पगा कानो देखकर रो पडे।" सो जमा पूंजो बिना कँया काम चालसी ?

लिछमी—या बी ठोवा हो ज्यायगो।

गोपीराम—तो बो, क्यु उपाय बो ?

लिछमी—उपाय तो या है, कि मेरे कने गेणू है जिको लेल्यो, ऊ से काम चलावो। दिन बावडेगो जणा और घणाई गेणा हो ज्यायगा। नई हुगा तो के आट है। किसा गेणा बिना मसारमें मिनख कोनो रवे है के? किसा सगलाकेई गेणा है के ?

गोपीराम—(मनमें) लुगाई बो होय तो ईसोई होय। लुगाई के है—"यथा नामा तथा गुणा है" और एक लम्बर हिम्मतवालो वीरबालो है। आज कालको लुगाया आपके मुसे तो गेणू दोणको क्याके नाई के देवे, अगर मुसीबतके वखत् मर्द मोथ्यार गेणु माग बेठें तो, नो नाडो बहत्तर कोटीको जो नोसर जाया करे है। पण धन्य है एकी छातीने तगीके वखत गेणू दोणने त्यार होगई। तुलसीदासजो बोतो साची काहो है—

"धोरज धर्म मित्र अरु नारी, आपत्ति काल परखिये चारी।"

लुगाईको परोचा आपत्तकालमें आपइ हो ज्यावे है (उपरसे) तु कवे जिको तो साची है पण ऐं गेणासे कितनाक दिन काम चालसो ?

टोब यो, अंयाई छप्पर पर घूमे यो पण उणाके मरणे
लायई सोक्यु उलट पलट होगई। आच्छ्यो, व
लातना, ढलतो फिरतो छाया है। फेरुं वो करे चोखो दि
आच्यावगो।

(इतणामें लिछमी आवे है)

लिछमी—आज थे कैंया गुम हो रिह्या हो ? के फिकर
पड रिह्या हो ?

गोपीराम—(निमलोसो जोबसे) नई क्यु ईना।

लिछमो—या बात तो क्यु कवो। क्यंना क्यु सोच त
जरुरई है। साचो बतावो ?

गोपीराम—काकोजो मरणेको आज कुछ ख्याल आगयो
जणा चितपर उदासी छा गई, जिकासे चिन्त्या मालू
देती होगी।

लिछमी—अया ख्याल कर्या, चित्तपर बिचार ल्याय
कैंया पार पडसो। मा बाप सदाई थोडाई बैठ्या रिह्य
करें है।

गोपीराम—या ता ठीक है। पण ऊणके मरणेसे घरको
बोज वो तो सगलो मेरे ऊपर गिर गयो।

लिछमी—यारे सिर पर बोज गिर गयो तो के आट है
वो पूर्णब्रह्म कीडीने कण हाथीने मण देवे है जिको आपक
भरण पोसण करसो।

गोपीराम—वो जगतको पालन करता तो सबको

मालिक है उ की तो आसरोई है। पण वा कह्या करे है—"मोर नाचे नाचे पण पगा कानी देखकर रो पड़े।" सो जमा पूंजी बिना कैया काम चालसी ?

लिछमी—वा बी ठोवा हो ज्यायगो।

गोपीराम—तो बी, क्यु उपाय बी ?

लिछमी—उपाय तो या है, कि मेरे कने गैणूं है जिको लेल्यो, ऊ से काम चलावो। दिन बावड़ेगो जणा और घणाई गैणा हो ज्यायगा। नई हुगा तो कै आट है। किसा गैणा बिना ससारमें मिनख कोनी रवे है के ? किसा सगलाकेई गैणा है के ?

गोपीराम—(मनमें) लुगाई बी होय तो इसोई होय। लुगाई के है—"यथा नामा तथा गुणा है" और एक नम्बर हिम्मतवाली वीरबानी है। आज कालकी लुगाया आपके मुसे तो गैणू दीणको क्याके ताई के देवे, अगर मुसीबतके बखत् मर्द मोच्यार गैणूं माग बेठे तो, नो नाडी बहत्तर कोटोकी जी नीसर जाया करे है। पण धन्य है एकी छातीने तणीके बखत गैणूं दीणने त्यार होगई। तुलसीदासजी बीतो साची कही है—

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपत्ति काल परखिये चारी।"

लुगाईकी परीक्षा आपत्तकालमें आपई हो ज्यावे है (उपरसे) तु कवे जिको तो साची है पण ऐ गैणासे कितनाक दिन काम चालसी ?

लिछमी—जितणा दिन चालै जितणा दिन तो चलावो पीछे और कोई रस्तो बैठ ज्यासो। दाल रोटी तो भगवान देईसो।

(इतणामें मुरली रोवतो २ आवे है)

गोपीराम—(मुरलीने) क्यू बेटा। कैंया रोवे है ?

मुरली—(जोरसे रोकर) एक छोरो थप्पडकी मारकर भाग गयो।

गोपीराम—कुणसो छोरो थो ?

मुरली—भोलियो दरजियाको।

गोपीराम—आजकाल मेरा मटा दरजीडाको मौत सिर सूज गयो।

लिछमी—रामका माख्या गोला है।

गोपीराम—गोलाकी तो ये बातई है। साची बात है— "गोल्यो और सुज पराये बल आवस्या करे है" एक बडे आदमीको थोडोसो स्हारो हो गयो है, जिकासें ये बदी के घोडे सवार हो रिह्या है।

लिछमी—या बो दिनकी बात है। अंया छोराके माख्या करै है के ? कुजगा लाग ज्याय जणा के मण बीगोको काटे ?

मुरली—(सुबकतो २) मेरेकानौ लात बो वाई थी पण मैं सरक गयो, नंई तो और बी जोरकी लागती।

गोपीराम—ऊ के के आट थी। ऊकै भावे कठेई लागो। (मुरलीने पुचकार कर) ना, बेटा। रोवे मतना। आपण,

दिन हुसोई है। अंया मतना करे आपा वो जने मारागा। मिलण दे देख किसीक करा (मनमें) शूद्रकी जात मार खाया बिना ठीक रस्तेपर कोनी आवै। महाराज तुलसीदासजी साची कह्यो है—

"ढोल गवार शुद्र पशु नारी, ये सब ताडनके अधिकारी।" सो कदेना कदे गोलाका सिरमें ठोलो लाग ज्यावेगो जणा आपई मान ज्यावेगो।

लिछमी—(मुरलीने पुचकारकर) आव, आछ्‌ पूछले। देख तनें खिलारा द्युगो। -गांवमें मना जायाकर। घरमें खेलवो कयाकर। बेटा, धूम मना कयाकर।

मुरली—मैं के धूम करे हो। मैं तो मेरे गेले आवैथो, जिको वो जोरामरदी मेरे चनपट लगाकर भाग गयो।

लिछमी—भाग ज्याणदे। तेरा काकोजीने मिलेगो जणा उने ये खूब मारेगा। बेठ्‌ज्या, रामका सुवाया कलेवो करले।

(मुरली कलेवो करण लाग ज्यावे है)

गोपीराम—आच्छयो तो मैं बावडीमें स्नान कयाऊं हुं। तु इतणे रसोई त्यार करले।

मुरली—काकोजी! मैं बी बावडीमें न्हावण चालुगो।

गोपीराम—ससरा गधा! कलेवो तो करले। काल न्हावण आवा जणा तुमी चल्यो चालिये।

मुरली—(कलेवो छोडकर) या ल्यो। मैं तो न्हाया बिना कोनी खाऊ।

गोपीराम—बावला बेटा! अ या कह्याकरै है के ? कलेवो करले। नाराका मुडा कुण धोया है।

लिछमी—दब थे क्यु खड्या हो ? जावो न्हायावो क्युना। यो तो अ याई करबो करसी। (मुरलीने) बेगो बेगो जीमले तने तमाशा दिखावागा।

(मुरली फेरु कलेवो करण लाग ज्यावे है और गोपीराम बावडीमें न्हावण चल्यो जावे है)

❁ प्रवेश दूसरो ❁

ठिकाणो सहरके किनारेकी बावडी।

(गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) मोजीरामजी महाराज डडोत!

मोजीराम—(मुलककर) सुखी रहो सेठा।

गोपीराम—के हो रिह्यो है ?

मोजीराम—देखल्यो। रामजो आख तो बडी २ दई है।

गोपीराम—देख्याई पड्या हो। वा कह्या करै है—"घर जायेका दात गिणियेक दिन।"

मोजीराम—ओहो! जणा तो आप पूरा जाणकार हो।

गोपीराम—महाराज। थारैसैं तो कमतोई छा।

मोजीराम—कमती कया छो? पूरा छो।

गोपीराम—पूरा महात्मा तो थे बिरामण लोगई छो।

मोजीराम—आजकाल हमास्तिया बामणाने कुण बूजे है। म्हारो बूज तो उठ गई। आजकाल तो बाणियाई सगलीतरा महात्मा हो रिह्या है।

गोपीराम—इरो मतना। बामणाके मिस्राणी जीवती रवो, पीछे तो बामणाका आवई पोबारा है।

मोजीराम—जणाई तो बाणियानें महात्मा बतावा छा। कुबदको जड तो थेई लोग छो। म्हारे तो यो झूठो कलक है (हसकर) और बात तो जाणद्यो। हासी ठट्ठा तो युई होबो करैगा। बोलो। आज उदास कया छो?

गोपीराम—थे किसा कोनी जाणू!

मोजीराम—ऐं बातको के फिकर है। सुस्त मतना रिह्या करो। खुब हुंसियार रिह्या करो। माबाप तो सबका मरता आया है। हिमत राख्या करो। वा कहोवो है—"हिम्मत मरदा मदत खुदा, बादस्याको बेटो फकीरको निकाह।"

गोपीराम—(मुलककर) महाराज। बामण हो जणां बोली आवे है।

मोजीराम—बाणियाको जीबपर देई माई बैठी रवें है के?

गोपीराम—आज कैंया चचक बचक हो रिह्या हो? मिस्राणीजी घरसें निकाल दिया के?

मोजीराम—निकाल्याई पछा हा। अठे तो अ याई "सदा दिवालो साधके, आठुपहर आनन्द।"

गोपीराम—आज भाग बुंटोकी मिसल कोनी बैठी दीखे?

मोजीराम—या कह्यो! भाई, वाणियावो जबरा होय हैं। मनको भट जाण ज्यावे है।

गोपीराम—कह्यावो तो करें है—"अगम बुद्धी वाणियु, पच्छिम बुद्धो जाट। तुरत बुद्धी तुरकडो,वामण सपट पाट॥"

मोजीराम—खेर! बामण तो संपट पाटई सही। पण भाग बुटीके ताई खाली पूछई लईका क्यु डोल डालबो बैठसी?

गोपीराम—यातो थे जाणुंई हो कि आजकाल घरमें चाको न्योरता कर रह्यो है। पीछे म्हे के मिसल बठावा?

मोजीराम—यो थारो कैण भूल है। समदर सुसे तोबी गोडा सुद्धो पाणी जरुर रहादे। म्हारो तो एक चवन्नीमें काम बण ज्यायगो।

गोपीराम—थेबो वाई करो—"आन्दा स्वामी राम राम, तेरेई न्युतो।" पण खैर (चवन्नी हातमें लेकर) ल्यो, थारो मतबलतो बुणगो म्हारो तो देखी जासो।

मोजीराम—(चवन्नी लेकर) सुखी रहो! (मनमें) आज तो भाई मोजीराम—मोज हो गई। (ऊपरसे) हे, त्रिभू कैलासपति! गोपीरामजीने वेगोसो लखपती कर न्यु रातदिन दूदिया छणवो करे। दुश्मनकी छातीपर गेरो रगडो लागबो करे।

(इतणामें सेवाराम आवे है)

सेवाराम—(गोपीरामने देखकर मनमें) आज यो गोपियो अठे मिल गयो। रस्ते गैलेमें मिलतो जणा तो मुंडो फेरकार दूसरी कानो चल्या जाता पण अठे क्यामें वड़ा, अठे लुकणनैबो जगा कोनी। बावडीको काम ठैसो। इब तो मुलाबलाई होसी। इब यो स्यारमी जरूर क्यूं ना क्यूं मागसी। नटस्या तो बुरा लागस्यां नई नटा तो दोणने कव्यासू आवे। भोतई मुस्काल मडो (रुककर) चालो के आट है देखो नासो टाला लीए का घणाई रस्ता है। नटणेंकी शिक्षा तो वडकासे घणीई मिली है। ऐंका रस्ता तो घणाई याद है (गोपारामने) आज स्नान करणने आयो के ?

गोपीराम—हम्बें जो, जयगोपालजीको।

सेवाराम—जयगोपाल।

गोपीराम—(थोडो उदास होकर) के बताया। काकीजी की थारी तो घणई मेल थो।

सेवाराम—(लापरवाईसें) इब मेल के काम आवे। आगलाको सुरगवास हो गयो। इब उनसें के सीर रियो।

गोपीराम—(मनमें) यो तो काकोजी को भोत भारी जिगरी भायेलो थो। दोनु एक दातकी टूटी रोटो खाय था सो अ को परिवार तो लेणी चाये देखा यबु ततमो हैका, खाम्बो टफोल सखोई भायेलो थो (ऊपरसें) थाने इब म्हारी मदत करणी चाये। अैं वगत थोडी हस्यारो दोणों चाबै।

सेवाराम—लाला। मैं तन, मनसें थारी मदत करणने त्यार छु।

गोपीराम—तन मनसें मदत करणिया तो और घणाई मिल ज्यावेंगा। थाने तो श्रैं वखत कुछ रुपयाकी मदत करणो चाये। मदाई इसा दिन कोनी रवेंगा। कदे म्हे बी आदमी हो ज्यावांगा।

सेवाराम—लाला। तु कही जिको तो ठीक, पण आज काल रकम सगलो रुजगारमें फंसो पडी है। और छारावो आप आपकी मते हो रिह्या हैं सो रुपया पोसाकी तो मैं यग ई कोनी कहणे सकुं। मेरा शरीरसें तो मैं त्यार छु।

गोपीराम—(मनमें) तेरा शरीरको के करा। चुलामें न्याक, चोरावै लेज्याकर गाडा (ऊपरसें) खैर। थे थारा श्रगसें मदत करणने त्यार हो, याई भोत है।

(सेवाराम ग्हाकर चल्यो जावे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) स्नान कर लिया तो चालो चालां।

मोजीराम—चालो सेठ साब।

गोपीराम—बाबाजी, म्हे क्याका सेठ हा।

मोजीराम—देखो म्हारा मूं से निकलीई है। इब घणाई जल्दी थे सेठ होज्यावोगा।

गोपीराम—चोखी बात है। चालो।

(दोनू जावें है)

: प्रवेश तीसरो :

ठिकाणो घीसारामकी दुकान।

(गोपीराम मोजीराम आवे है)

मोजीराम—(गोपीरामने) देख्या, जमानाकी बात ! थारा काकोजी भैं सेवारामको कितणो २ मदत करी थी। यो, बात उ'पके मरताई भूल गयो। ससारमें कोई बी किसीको नई है। साचो कह्या करें है—

"मतलबकी मनुवार, जगत जिमावे चूरमू ।
बिन मतलब ससार, राब न घाले राजिया ॥"

भैं मुघलचदने जगबी नटता लाज कोनी आई। झट नटकार नाके होगयो, कोरबग जबाब देदियो।

गोपीराम—म्हारी लिहाज बाकी आवे थी। म्हे बिसा बराबरिया छा जिको काजने म्हारेसे काम पडे गो तो बदलाको जबाब मिल ज्यायगो।

मोजीराम—सेठ ! या तो ढलती फिरती छाया है। भैं बातको किसी कोईने अमरपट्टो दी गयो है। आज ताई लिछमी कोई के पीडी घालकर नही बैठी है। या तो डोलती फिरती ई रवे है।

गोपीराम—म्हाराज ! निछमी हुया पीछे या बात दोखण से रह ज्यावे है। ऊपरने आपरो ही ज्यावे है।

मोजीराम—उसो यो लिछमीवानको तो कोनी। काठे दस बीस हजारको पूंजी होगी। पण वा कहा करै है—"उजड़ गावमें कुम्हारई म्हतो" "जे गावमें रूंख कोनी जिकामें अरंडई रूख।"

गोपीराम—अठे तो योई टीकली कमेडी हो रियो है। अकी मारोड़ी तेढ़ंपताल जाय है।

मोजीराम—जणा के, घण ऊझनकार भाडनै फोड गेरै।

गोपीराम—म्हाराज। भागवानाकी दूर बलाय है।

मोजीराम—वसी के, जणां म्हे थुई देई देवता मनावा हा थि, थे वेगासा लखपती हो। थेवो धनवान हुया पीछे येई धन्दा करोगा के?

गोपीराम—"काना काला सेई बापका साला।" सगलाई आदमियांनै इकसार समझ लिया के? म्हाराज। वे श्रोछा आदमियाका काम है कि, लिछमो पाकर गुमानमें टेडा हो ज्यावे है, गरीबानै नोचो निगासे देखण लाग ज्यावे है। चोखा आदमियाका ये काम नई है।

मोजीराम—या बात चाये तो नई। क्यु कि मुग मोठमें कुण छोटो बडो है। आदमीनै ईश्वरके नीचे बसकर गरब गुमान कदेबो नह करणू चाये। हर बखत हृदयमें दया रखणी चाये। दयासें धर्म्मकी वृद्धि होय है, अभिमानसे पापकी वृद्धि होय है। महाराज तुलसीदासजीबी तो

चाहे है—

"दया धर्मको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण॥"

गोपीराम—दया कठेसें होय। भगवानका भजनसें हृदयमें ज्ञान होय जणा होयगा। जिका तो लोग रात दिन पापमें लीन हुया जावें है। भगवानका भजनको उलटो हांसो उडावे हैं।

मोजीराम—याके आछी बात है। घणा खोटा भुगातसी। कह्या करें हैं—

"हर भजता हांसी करे, जाके पेटे पाप।
पेट पलाख्या चालसी, लगल होसी साप॥"

(यें माफक दोनु जणा बात करता २ घीसारामजी दुकानके बारला चुतरापर आकर बेठ ज्यावें हैं)

घीसाराम—(मनमें) यो गोपियो अठे क्यु आगयो? यो बामणडोबो महा मूरख है। या कह्या करें हैं—'मानि ना मानि में लाडाकी भुवा।" झट् दोनु जणा होठामा दुकानपर आकर बेठ गया। आदमी हाथ पकड कर उठा देवे तो बुरो लागे। हा! एक बात समझमें आगई। भीतरसें नाजको धुल भोत पडी है सो भारी निकालणी चाये, जिको अ यमें गरदो पडेगी, जणा आपई उठ ज्यायगा (भारी

मोजीराम—(हँसकर घीसारामनै) बस। बस॥ आज तो भोत उडायो

गोपीराम—आज तो छाण्यो कुण्योई उडा दियो।

मोजीराम—(गोपीरामनै) देखो के हो, बाणियांवालो भारी हो गई है। बाणियाको जोर दुकानपरई चाल्या करै है। कहीबीतो है—

"जाट न जंगल छेड़िये, हाट्या बीच किराड।
रागड कटै न छेडिये, तुरत काट दे नाड॥"

गोपीराम—चालो अब तो उठणुई पडसी।

घीसाराम—(उपरला मनसे) नई नई। बैठो। बैठो॥ (मनमें) मेरा मटा जाय तो गया। जाणों भलाई आपा तो या चावाई हा।

गोपीराम—(मनमें) ऐसेबी काकोनी भोत दीण लोगाको विचार राख्या करता। यो काकोजीसें पांच च्यार सो रुपया पैला लियाया करतो, पाछै धीरा २ चोज वस्त भेजकर पूरा कर्‌या करतो, सो एको बात बी तो जरूर पजोखणी चायै (उपरसें) घीसारामजी। आज तो घरां गिऊं कोनी सो पच्चीस रुपयांका गिऊ इबी भेज द्यो (गिवा कानी आगलो करकर) ये थारै गिऊ पछा जिका भोत चोखा है सो येई भेजद्यो।

घीसाराम—(मनमें) बस, या तो पैलाई दीखै थी कि बैठ्याका नामको क्युं ना क्युं जरूर लपचेड लागसी। देखता

परात मायो ठिणक गयो थो, सो बाकी बा हुई। पण एक नव मो दुख हुडे है। इबती चतराईसें बिलकुल नट ज्यागुई ठाक। (ऊपरसे) गिऊ तो पूष ज्यासी, पण थे घरा जाताई रुपया इबी भजद्यो। हुन्डी लई है एका रुपया मन्ने देवो दीणा पडेगा।

मोजीराम—(गोपीरामने सुणाकर धिरांसी) रुपया होता तो तुइ थो के। चुतिया मर गया औलाद छोड गया। हुनदकी गाठ लेकर सुंसो पसारोई होगयो। देख्यो ऐंको डोल। सुंलिया जाणु चालणीसो।

गोपीराम—(घींसारामने) गिवाको भाव के है?

घीसाराम—भावतो दश सेरको है।

गोपीराम—देखा, वरा जाऊ हूं। चायेगा तो रुपया भेजकर मगा लेऊ गो।

घींसाराम—(लापरवाईसे) तेरी खुशी।

मोजीराम—(गोपीरामने) ल्यो। चाल्ना।

गोपीराम—(ऊठकर) चालो महाराज।

(दोनु जावे है)



मोजीराम—(हसकर घींगारामने) बस। बस॥ आज तो भोत उडायो

गोपीराम—आज तो छाख्खों कुण्योंई उडा दियो।

मोजीराम—(गोपीरामने) देखो के हो, वाणियावाणो भारी हो गई है। वाणियाको जोर दुकानपरई चाल्या करे है। वाहीवोतो है—

"जाट न जंगल छेड़िये, हाट्या बीच किराड।
रागड कदे न छेडिये, तुरत काट दे नाड॥"

गोपीराम—चालो इव तो उठणुई पडसी।

घींगाराम—(उपरला मनसे) नई नंई। बैठो। बैठो॥ (मनमें) मेरा मटा जांण तो गया। जाणों भलाई आपा तो या चावाई हा।

गोपीराम—(मनमें) एँसैबी काकोनी भोत दीघ लोयको विचार राख्या करता। यो काकोजीसें पांच च्यार सो रुपया पेला लियाया करतो, पाछे धीरां २ चोज वस्त भेजकर पूरा कया करतो, सो एको बात बोतो जरुर पजोखणी चाये (उपरसें) घींगारामजो। आज तो घरा गिळ कोनी सो पच्चीस रुपयाका गिळ इबी भेज द्यो (गिया कानी आगलो करकर) ये थारे गिळ पड्या जिका भोत चोखा है सो येई भेजद्यो।

घींगाराम—(मनमे) बस, या तो पैलाई दोखे थी कि बैठ्याका नामको क्युना क्यु जरुर लपचेड लागसो। देखता

मोजीराम—थारीई जोमा छा। म्हे तो आज या बातई देखे था।

निछमो—बस के, नपातो बेरो पड्यो।

मोजीराम—जद म्हे अया जीमण लाग ज्यावागा तो श्रोजु ये जीमणको नामई कोनी लेवोगा। धर्ममूर्त! यो तो उलटा हाथाई घो घस्या करे है।

(इतणामें मुरली खेलतो २ आवे है)

मुरली—(मोजीरामने देखकर) आ—हा—रे। अगड धत बावो आयोरे। बाबा! रादाकिशन २ बोल।

मोजीराम—थत्तेरो नानीको नाक काटु। बोल, श्रीहरी श्रीहरी। सीताराम, सीताराम बोल।

मुरली—(नाड हलाकर) बाबा! रादाकिशन! रादा-किशन!! बोल।

मोजीराम—कोनी मानेके। मार खायगो के?

मुरली—(हायका इसारासें) बाबा। यो देख तेरी पगडी डुपट्टामें रादाकिशन बैठ्यो है।

मोजीराम—(पगडी डुपट्टो फीककर) या वाने, देखा इव बो कठे बैठेगो। बावला बेटा! चोरको नाम नई लिया करें हैं।

मुरलो—बो चोर कंया है। तं चोर होगो।

मोजीराम—तेरो नानु चोर है। मैं क्यु चोर हूं।

❀ प्रवेश चौथो ❀

ठिकाणो गोपीरामको घर।

(गोपीराम मोजीराम आवें हैं)

लिछमी—(गोपीरामने) न्हाआयाके ?

गोपीराम—इस्बे।

लिछमी—आवो, रसोई त्यार है, जोमल्यो।

मोजीराम—बैठाणोजी। रूहेवी न्हा आया छा।

लिछमी—महाराज। चोखो काम कर्यो ? विरामणको धरम है।

मोजीराम—म्हानि कोनी जिमावो के ?

गोपीराम—(मुलककर) साची बात है—"बामणने बतलायो, लख्या लाग्यो आया।" आगलो पकड़ तो पूचोई पकड़णने लाग गयो।

लिछमी—(मोजीरामने) थारो तो सगलो परतापई है।

मोजीराम—थेबी वाई करो हो—"भू तेरोई सो क्यु है, पण कोठ्यार कोठलीके हाथ मत लगायो।"

गोपीराम—(हसकर) देखो, "आई थी आगीने घरकी धिरियाणीई हो बैठो।"

लिछमी—(मोजीरामने) ये तो, थांरिमें हासी करें है। आवो जीमो क्यु ना।

गोपीराम—इब तो तेरे समजमें आवे तो मेरे एक बात भोत ठीक जचे है।

लिछमी—(आग्रहसे) कणसी? बतावो?

गोपीराम—देख, अया बैठ्या २ खाया तो कोठ्यार कोठलो निमड ज्याया करें है, सो मेरेतो परदेश जाकार कुमाणेकी समजमें आवे है। तेरे के जचे है?

लिछमी—(सास लेकर) थे या बात थारा मुडासे मतना कवो। अयाकी बात केणेसे मेरो कालजो जगा छोडे है। मने थारे सिवाय के दीखे है। मेरेसे तो थारो यो बिछोवो कोनी सह्यो जावे।

गोपीराम—बावली। अया कया कैया काम चालसी। देख, सगलाई मर्द मोथ्यार कुमावणने दिसावर जावे है। मैंई किसो नयो जाऊंछु। औराकै लुगाई कोनी है के? उणांकै दुख कोनी होय। तेरेई इसो ज्यादा दुख कैया होय है?

लिछमी—उण लुगायाने पुछ्या बेरो होय ना। वे मरें तो है नई पण उणमें बाको कछु बो रवे नई। मोथ्यार जोराम रदी लुगायाने बिलखती छोड कार चल्या ज्यावे, जणा बिचारी के जोर करें।

गोपीराम—बात तो तु कवे जिकी बी साचो है। पण ई देशमें तो कोई रकमको रुजगार भिवार है नई। अठे रुजगार चोखो होतो तो परदेश जाणको के जरूरत थी।

मुरली—(लिछमोने) देख ये मा। नानुजीने चोर बतावे है।

लिछमी—बेटा। खिज्या नई करे है। बावो है, अयांई कहबो करे है। आज्या जीम ले।

मुरली—मैं तो काकोजीके सागे जीमुगो। पैला कोनी जीमु।

मोजीराम—(गोपीरामने) सेठा! ईब तो म्हाने ईजाजत द्यो, जावा हा।

गोपीराम—जावोगा? आच्छो फेरू मिलियो। कदे २ म्हारे कनेबी आज्याया करो।

मोजीराम—जरूर। जरूर॥ थारे कने नई आवागातो कैंके कने आवागा। थारी तो मालाई फेरा हा।

(मोजीराम जावे है.)

गोपीराम—(जोमकर) मुरलोकी मा। आज तो काकोजी का भायेलाने और बजारका बाणियांने आछोतरा जांच लिया है। सगला जणा नट कर नाके हो गया है।

लिछमी—नयोडाई पड्या है सगलो ससार सुखको सीरो है।

गोपीराम—साची वात है—बिन मतलब कोई चिरी आगलीपरई कोनी मुते।

लिछमी—अैंकोने कैंणु! या बात तो चोडेई पडो है।

जुहारमल—थे या बात तो भोत सोचणी विचारी है। वैश्यको कर्त्तव्य है व्यापार करणु। "व्यापारे वर्द्धते लक्ष्मी" परदेश जावो खुब व्यापार करो। व्यापारही से लक्ष्मीको वृद्धि होय है। म्हारी तो थारी बढतीमेंई सोर है। भगवान थानै बुणाया राखो। थे वेगासा लखपती किरोडपती हो। म्हे तो रात दिन आप लोगांकोई माला फेरा हा।

गोपीराम—देखो, आप लोगाकी कृपा होगी तो दिन आवडता के देर लागे है। पण म्हारै तो मुरलियाकी मा भोत हठकर राख्यो है।

जुहारमल—क्या को ?

गोपीराम—कवै है—थानै परदेश कोनी जाण देऊ। ज्यादा कवागा तो या जीवनै पूरोसारो कलेश करण लाग ज्यावेगी। ई बातको पूरो डर लागै है भोत मुस्काल मंड रही है।

जुहारमल—जणा ई बातको ओर कोई रस्तो सोचकर ठीक ठाक करल्यो।

गोपीराम—रस्तो के ठीकठाक करा ? वा तो कवै है— मेरी गैणू भलाई लेल्यो पण अठेई रवो परदेश मतना जावो। सो थे स्याणा हो ऐंया गेणासें कदताई काम धिकायो जायगो। आखर पार तो पडसी कुमाईसें।

जुहारमल—थारा मन बिलकुल जाणेनेई है तो कोई मिस लेकर चल्या जाव

लिछमी—दुकान पर तो जावो भलाई पण ओजुं परदेश जाणेको नाम मेरे आगे मतना लियो। थारे आगे मैं हाथ जोड़ुं हु।

गोपीराम—आच्छो, ठीक हैं।

(गोपीराम जावे है)

---

* प्रवेश पांचवों *

ठिकाणो जुहारमलकी बैठक।

(गोपीराम आवे है)

जुहारमल—(गोपीरामने देखकर मनमें) आज यो गोपीराम कैंयां आवे है। आजकाल अेंका घरमें तगी है सो रुपया पीसाके ताईं तो कोन्या ल्यारसी। देखो जासी आवण द्यो (गोपीरामने) आवो गोपीरामजी, आज कंया पधार्‍या?

गोपीराम—(हाथ जोड़कर) डंडोत जोश्योजी।

जुहारमल—सुखी रहो। फरमावो के हुकम है?

गोपीराम—म्हार घरका हाल तो थारे से छिप्या नईं है। काकोजी मर्‍या पीछे तकलीफ ही तकलीफ भोग रिह्या हां। अैं हालतमें प्यारा परसगी सगला नाका दे बठ्या सो यो विचार करा हां कि परदेश जाकर तकदीर तो अजमाणी चावे।

कर जावागा (पतड़ो देखकार) आज रातने तो पूर्वको सुहरतवो भोत श्रेष्ठ है। इब तो थारा मनका चाया हो गया। सुहरतवो ठीक है, दोनु बात मिल गई।

गोपीराम—हां। तीसरा बिरामण वचन प्रमाण।

जुहारमल—हां। या बी ठीक है।

गोपीराम—ठीक है तो, मे जाऊ हूं आजको बिचार पक्को रिह्यो। थे रातने सिद्ध करावणने जरूर आपेई आज्यायो।

जुहारमल—ठीक है।

(गोपीराम जावे है)

प्रवेश छट्ठो !

ठिकाणो एक गलीको मोड।

(गोपीराम मोजीराम आमने सामने आवे है)

गोपीराम—(हाथ जोडकार) डडोत बाबाजी।

मोजीराम—(मुलकवार) सुखी रहो। आज काठीने सैल सप्पटा हो आया ?

गोपीराम—(मुलककार) पेला थारो कवो काठीने आ आया ?

मोजीराम—म्हारो के पूछो हो। भगकी तरगमें घूमता

गोपीराम—थे स्याणा छो। इसोई कोई जुगती बतावो, जैसे लाठो टुटै न भाठो फुटै।

जुहारमल—एक काम करो। मुरलियाको मानै कह्यो—मैं भ्याणो माल ल्यावण जाऊंगो। ऊठेसे माल ताल ल्याकार अठै दुकान करूंगो। बस या कहकार चुपचाप भ्याणोंके नाम से सिद्ध कर कर कलकात्ते चल्या जावो।

गोपीराम—वाहजो जोशीजो वाह। श्रयाई करूंगो। यो रस्तो ठीक है। पण मुहरत तो निकाल द्यो।

जुहारमल—मुहरतकी या बात है—महुरत निकाल्या तो कैमे वैरो इदर मे वणैगोके नई वणैगो, कई रकमको श्रडास लागसी। एक काम करो—"श्रंगिरा मन उत्साही।" श्रंगोरा रिषोको मत है कि, मनको उत्साह होय जणाही यात्रा करणी श्रेष्ठ है। सो थारे मनमें श्रावे जणाई चल्या जावो।

गोपीराम—वा, जी बाबाजो! थारला बडकाबी खुब रास्ता निकाल राख्या हैं।

जुहारमल—श्रया रास्ता हुया बिना कैयां काम चालै। शास्त्र श्रवकाश तो सब बाताको देवैई है।

गोपीराम—जातराके बखत पूजन कराया करे है, निको काया करायु होगो?

जुहारमल—जिको तो थे पेलासे घरमें काई दियो—भ्याणो पेला पोत माल ल्यावण जावां हा सो मुहरत से पूजन करा

त्यार हो ज्यावो। रस्तामें बोलता बतलावता हसी ठठ्ठा करता चालांगा।

मोजीराम—बात तो थे कही जिको सोला आना है। पण ऊठे म्हारेंसे के काम लेवोगा म्हे तो मोजी जीव हां। कदे इसो नई हो ज्याय कि "धोबीको कुत्तो घरको रहे न घाटको।" अठे पाछा आंवण जुगता वो कोनी रया। ऊठेई छाडिया विखर ज्याय।

गोपीराम—जणाकी आंट है। अठेसे तो ठीकाई है। बठे ग गा माता कन्नई है, जिको मोक्ष हो ज्यायगी।

मोजीराम—ग्रैं बातको के डर है। अमरपट्टो थोडोई हो गयो है। जलम लियो है जिकाने तो एक दिन मरणुई पडसी। कहोमी तो है—

"आया है सो जायगा, क्या राजा क्या रंक।
मरनेका कुछ डर नहीं, रहरे जीव निसंक॥"

गोपीराम—या साची बात है। कबीरजीवो तो कही है—

"चलती चाको देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटा बिच आयकर, बाकी रहा न कोय॥"

मोजीराम—अच्छा बोलो म्हारेंसे के काम करावोगा? म्हे तो पक्का ठाव हा।

गोपीराम—अठे हाथ पग कोनी हलावणां पडे के? बेठ्या सुत्याई खाणने मिल ज्यावे है के?

मोजीराम—बस, अठे तो भगवान घर बर्याई भोजन

छोर्नां हां, पण म्हाने तो मेरा मटा छोरा कोनो टिकण देवें।

गोपीराम—थाने छोरा के कवें हैं ?

मोजीराम—चोरटाको नाम लेवें है ?

गोपीराम—के नाम लेवें है ?

मोजीराम—श्रादाकिशन! श्रादाकिशन!! बोलै है। मेरा मटा पिंडोई कोनी छोडै।

गोपीराम—थे बावाजो, सुख्या राधाकिशन, राधाकिशन क्यु बोल्या करोना। श्रैं नामसे थारी के वेर है? बोलो, राधाकृष्ण! राधाकृष्ण!!

मोजीराम—बस, वेरी पड्यो। "बावाजीकी भोलीमें जीव डाई नीकल्या। बोलो सीताराम।" सीताराम!! (ठहरकर) या तो जाण द्यो साची बतावो कठे जा श्राया?

गोपीराम—मैं तो जुहारमलजो जोशो कानी गयो थो।

मोजीराम—श्राज जोशोसें के काम हो गयो?

गोपीराम—(धीरासी) ,जिकर तो करियो मतना। दिशावर जाणको मुहरत काढावण गयो थो। श्राज, रातनेको मुहरत भोत श्रेष्ठ निकाल्यो है। सो श्राज कलकत्ते जावांगा।

मोजीराम—बस के? म्हारे तो थारोई घोडो न्हारो थो। भाग बुंटो की मनमें श्राती जणां दो च्यार श्राना थारेसे मिल ज्याया करता। सो थे वो धर्मधक्को दीण लाग गया।

गोपीराम—येवो क्यु चानोना। थारे श्रठे के लपपेड है?

गोपीराम—में तो घरमें भ्याणोको नाम लेकर जाऊगो। कलकत्ताको नाम लेनैसे घरमें कलेश होय है सो थ एक काम करियो—आज एक पहरके तडके, गावके बारणे पूरबकानी टीबडामें त्यार होकर आज्यायो। बठे थाने ऊटको आसण त्यार मिलेगो सो कपडा लत्ता घालकर असवार हो ज्यायो।

मोजीराम—भोत ठीक है।

गोपीराम—देखियो! थारे मनमें क्यु धकाड धुकड होय तो ईंबोसे कै दियो। कदे म्हे ऊठे खडा २ थारी बाट देखबो करा।

मोजीराम—यासी कदे होय है। मेरी जबानने लोको लीक समजो। मर्दको जबान तो एकई होय है। वा कह्या करें है—

"सिहभोग सापुरष वचन, केल फलै एक डार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढे न दूजी बार॥"

गोपीराम—जणा ठीक। चालो भोत देरी होगई। ईंब चालो।

मोजीराम—चालो।

(दोनु चल्या जावें है)

भेज देवे है। अलमस्त पड्या रवा हां, भगवान आपई दाल रोटीको फिकर करे है। वा कह्या करे है—

"इजगर पूछे ईजगरा, कहा वारत हो मित।
पडे रहत उजाडमें, दयू करत है चित॥"

गोपीराम—अच्छ्या तो अठेसेंवी वेसी उठे वैठ्या मोज करवो करियो। भगवानकी दयासे रोटी म्हाने मिलेगी जणा तो थाने वी मिलेगी। कदाचित् कानोमाई आपणी सुण लई तो गैरो टूदिया भाग घोटियो। धोडोपर वेठ्या आनन्द करियो।

मोजीराम—या बात है जणा जरूर चालस्या। देखो जायगी—"के तो घोडी घोडांमें, के चोरा लेई लई।" भोले मुणली जणा तो गैरो टूदिया छणेईगी। नईस रोटियांकी हामी थे भरोई हो। पीछे म्हाने और के चाये है।

गोपीराम—(छाती ठोककर) हम्रे साय, रोटियाकी हामी तो म्हे भराई हा पण रस्ता खर्चको डोलडाल तो है ना?

मोजीराम—थेबी चुचियामें गोल्नी देवो हो। म्हारे कन्ने के डोल देख्यो। वा कह्या करे है—"मरी क्यु तो सास कोनो आयो।"

गोपीराम—आच्छ्यो वावा। दुख और सुख, खर्चो बी म्हे दे देवागा। पण अठे थारे पैदा होय जणा दे दियो।

मोजीराम—जरूर। जरूर॥

लिछमी—या तो ठीक। पण आज रातनेई भ्याणी जावोगा के? थारे बिना मेरो मन लागणुं ई मुस्किल है।

गोपीराम—पाच च्यार दिन तो लागैईगा। घणा दिन थोड़ाई लागैंगा।

(इतणामें मुरली आवे है)

मुरलो—(लिछमीने) मा! की करे है?

लिछमी—(पुचकारकर) बेटा, आव। देख, तेरा काकोजी आज भ्याणी जाय है।

गोपीराम—(लिछमीने) बावली है के? छोराने क्यू लगावे है। टाबर है और गैल पड ज्यावैगो तो पिंडो छुटाणु मुस्कल हो ज्यायगो।

मुरली—(गोपीरामको गोदोमें लेटकर) काकोजी! भ्याणी जावो हो के? कोनी जाण देऊं। जावोगा तो मैं बी सागे चालुंगो।

गोपीराम—(पुचकारकर) बेटा! तेरो मा तो बावली है। तन्ने जोरामरदो बेकावे है। कठे जावा हा, कठेई कोनी जावा। अठेई रयागा।

मुरलो—थे झूठ बोलो हो। मन्ने भुलावो हो।

गोपीराम—बावला बेटा! तेरैसे झूठ थोड़ाई बोला हा।

लिछमी—(मुरलीने) नईरे। कठेई कोनी जाय।

(इतणामें भूरो आवे है)

गोपोराम—आयरे, भूरा! आज तो भोत दिनापर आयो।

* प्रवेश सातवों *

ठिकाणो गोपीरामको घर।

(गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(लिछमीने) या ले, मुरलीकी मा। तेरे मन माफिक काम हो गयो। तु जीती और म्हे हारया। सेस में तेरीई बात भाल रैगई।

लिछमी—(मुलककर) कँया ?

गोपीराम—बस, तेरीई डिगरी होगई। परदेश जाणेकी तेरे कोनी जची जणा म्हे अठेई काम करणेकी विचार लई। ब्याणीसे माल ल्याया करागा और अठे बेच्या बेच्या करागा।

लिछमी—बस, ठीक है। अ'याई करया करो।

गोपीराम—एक काम करणु होगो। सगलो गेणु मने देणों होगो। जिको ऊने कोईके धरकर रुपया लियावागा। ऊंई रुपया से ब्याणीसे माल ताल ल्यायकर अठे दुकान कर लेवागा।

लिछमी—गेणु तो सगलों त्यार है। थारोई है थारे जचे जद ले जियो।

गोपीराम—जुहारमलजीने पूछो थो सो आज तडकाऊ को मुहरत माल ल्यावणेको चोखो बतायो है। पैला पोत माल ल्यावण जावे जणां मुहरतसें पूजन कराकर जाणु चाये सो रातने पूजन कराकर चल्या जावागा।

मुरली—(गोपीरामने) देख ल्यो, ये झटना भाडे करो हो।

गोपीराम—बेटा। ये तो दूसरा आदमीके ताईं भाडे कर्या है। जा, थोडीसी बार बारणे खेल।

(मुरली जावे है)

लिछमी—सन्ध्या होगई है। मैं तो रसोई त्यार करूं छु।

गोपीराम—हां। करले। थोडो पूरमू वो सुगनको कर लिये।

लिछमी—कर ल्यु गी (रसोई करण लाग ज्यावे है)

(गोपीराम पिलगपर आडो हो ज्यावे है)

गोपीराम—(मनमें) साचो बात है—दिन करावैसो वेरीबी नई करावे। देखो, कितणी २ झूठ बोलणी पडी है। छोरी मेरे बिना एक पलक कोनी रवे, पण सुत्यामें छोडकर जाणु पडसी। मुरलियाको मानि कलकत्ते गयाको वेरो पटसी जणा देखी जाय थैंका के हाल होसी। या रामकी वेटी नाम लेणेसेई सास मारे थी सो वेरो पड्या पीछे तो पूरोई जोमि कलेश करेगी। एकबर तो आपणु बी गावसे नीकलताई मन लागणु मुस्कल है। इबौसे चित्त भीतरसे उदास हुयो आवे है। कलकत्तेमें कोईको सहारोबी नई है। जाताई देखी जाय किसोक मिसल बैठे। भोजीरामने जबान दे दई जिको झ को बोनयो आपणे सिरपरई आ गयो। पण कुछ परवा नई। भीतरसे विश्वास होय है कि, पु घताई

भूरी—इबके दूरको भाडो हो गयो थो जणा घणा दिन लाग गया।

गोपीराम—आज तेरा दोनु ऊंट अठेई है के?

भूरी—हवें जी, अठेई है।

गोपीराम—आज रातने नारनौल चल्यो चालसी के?

भूरी—चल्यो चालु गो।

गोपीराम—बोल, के भाडो लेवेगो?

भूरी—रुपीडा च्यार दे दियो।

गोपीराम—च्यार तो ज्यादा है। रुपया तीन घेरासा ले लिये।

भूरी—के आंट है। थारे जचे सो दे दियो।

गोपीराम—रातने एक पहरके तडके कुची करका आज्याये।

भूरी—ठीक है, भोत चोखो! इब तो मैं जाऊं हूं ऊंटाने चरा ल्याकर त्यार करणा है।

गोपीराम—आच्छो जा। पण देखिये रातने जकाचुक नई होज्याय। कदे दोनों दीनसे जाता रवा। या तो मतना कर दिये—

"पेली तो हुयो जोगी, पीछे हुयो कुम्हार।
दोनू बोई बूबमा, आदेश न जुहार॥"

भूरी—नईजी! रातने जरूर आज्याऊंगो।

(भूरी जावे है)

मुरली—(गोपीरामने) देख ल्यो, थे जटना भाडे करो हो।

गोपीराम—बेटा! ये तो दूसरा आदमीके ताँई भाडे कया है। जा, थोडोसी बार बारणे खेल।

(मुरली जावे है)

लिछमी—सध्या होगई है। मैं तो रसोई त्यार करू हु।

गोपीराम—हां। करले। थोडी चूरमू बो सुगनको कर लिये।

लिछमी—कर ल्यु गी (रसोई करण लाग ज्यावे है)

(गोपीराम पिलगपर आडो हो ज्यावे है)

गोपीराम—(मनमें) साचो बात है—दिन करावेसो वेरीबी नई करावे। देखो, कितणी २ झूठ बोलणी पडी है। छोरो मेरे विना एक पलक कोनी रवे, पण सुत्याने छोडकर जाणू पडसो। मुरलियाको माने कलकत्ते गयाको वेरो पटसी जणा देखी जाय मैं'का के हाल होसी। या रामको बेटो नाम लेणेसेई सास मारे थी सो वेरो पड्या पीछे तो पूरोई जीमें कलेश करेगी। एकवर तो आपणु वी गावसे नीकालताई मन लागणु मुस्काल है। इवोसे चित्त भीतरसे उदास हुयो आवे है। कलकत्तेमें कोईको स्हारोवो नई है। जाताई देखो जाय किसोक मिसल बैठे। मोजीरामने जबान दे दई जिको जको बोजमो आपणे सिरपरई आ गयो। पण कुछ परवा नई। भीतरसे विश्वास होय है कि, पूपताई

काली माई बेडो पार कर देगी। कुमाईको ढग बैठताई टाबराने पठेसे बुला लेवागा (कुछ सम्हलकर) ओहो! देखो, इतणीई देरमें मनमें कै कै लहर उठण लाग गई। साची कह्या करे है—

"मन लोभो मन लालची, मन चचल मन चोर।
मनके मते न चालिये, पलक पलक मन ओर॥"

(इतणांमें लिछमी हेलो मारे है)

लिछमी—आवो, रसोई त्यार है, जोमल्यो।

गोपीराम—आच्छो मुरलीने आवण दे।

(इतणामें मुरली आवे है)

मुरली—(लिछमीने) मा! रसोई हो गई के?

लिछमी—हा! हो गई। तेरा काकोजीने बला ले।

मुरली—(गोपीरामके कने जाकर) काकोजी! चालो रसोई जीमल्यो।

गोपीराम—(ऊठकर) चालो बेटा!

(गोपीराम मुरली जीमे है)

मुरली—(जीमकर) काकोजी! चालो आपा तो आपणा चोबारामें चोवागा।

गोपोराम—(जीमकर) हा! चालो बेटा।

(दोनु चोबारामें जावे हैं)

लिछमी—(जीम जुठ चोकी बरतण करकर) चालो जीवडा सोवा। पछे तडकाऊकी ऊठणु है। (गोपीराम

के कने जाकर) ल्यावो थारा पग दाब द्यू। पीछे तो थे जावोगा।

गोपीराम—जावागा तो के है। पांच च्यार दिनमें पाछा आज्यावागा।

लिछमी—पांच दिन तो पांच बरस बराबर नीसरैंगा।

गोपीराम—(मनमें) ऐसें इब ज्यादा बोलणु ठीक नईं। ज्यादा बोल्या भेद खुल ज्यायगो (ऊपरसें) मने तो ईब नींद आव है। मैं तो सोऊ छु (सो ज्यावे है)

(लिछमी मुरलो भी सोज्यावे हैं इतणामें आधी रात ढल ज्यावे है)

जुहारमल—(हेलो मारे है) गोपीरामजी ! गोपीरामजी ! !

गोपीराम—(जागकर) कुणी ? जोशीजी !

जुहारमल—हा ! बखत होणामें आगयो है।

(इतणामें भूरो दो ऊट लेकर आवे है)

जुहारमल—पेला दोनु ऊंटापर कापडो लत्तो घालकर त्यार करल्यो।

गोपीराम—(ऊंट त्यार करावार) ऊंट तो त्यार है। इब बोलो ?

जुहारमल—चालो पूजन करावो, टेम हो गई।

गोपीराम—चालो (पूजन करावे है)

जुहारमल—(पूजन कराकर) करो सिद्धदाता गणेश।

(भूरी छटाने आगे २ खीच लेवे है, गोपीराम गेल २ सिद्ध कर ल्यावे है)।

गोपीराम—(टीवडामें पूचकर) मोजीरामजी पूंच्याक, कोनी पूच्या।

मोजीराम—त्यार छुं।

जुहारमल—बस तो, देरी मत करो, लयो गणेशजोको नाम।

(गोपीराम मोजीराम छटापर चढकर पूवँने सिद्ध कर ल्यावें हैं)

प्रथमांक समाप्त।



अंक दूसरो ।

⊛ प्रवेश पैलो ⊛

ठिकाणो हवडाको स्टेशन।

(गोपीराम मोजीराम खड्या है)

मोजीराम—(च्यारु' कानी देखकर) श्रोहो! कठै श्रागया। मेरी तो तोरन फुल गई। मैं तो मेरी ऊमरमें इसी जगा कठेई कोनी देखी।

गोपीराम—इवी के हुयो है। अकल तो चरख होगी रहर देख्या। वा कह्या करे है—"बावाजी तिलक तो भीत' चौडा कखा, बचा सुक्या फाटसी।"

मोजीराम—इसीके! म्हे तो या ठेसण देखःकारई चकरा गया।

गोपीराम—श्राच्छ्यो तो, ईंव बोलो, कठे चालणु चाये?

मोजीराम—थारे जचे जठे चालो। मन्ने तो भूख लाग्याई पैली श्रैंकी ऊपाय करो।

गोपीराम—बावाजी! नो बजेई क्याकी भूख लाग्याई। घ्यावसक्यो हाम दिन ऊग्योई है, रोटीवी मिल ज्यायगी। धीरा २ सगली मिसल बैठ ज्यायगी।

मोजोराम—आपणे तो रोटीयाकी तजवीज पैला करो और मिसल मलाई पीछे बठायो। पैलां पेट पूजा होणीं चाये। वा कह्या करें है—"पैला पेट पूजा, पीछे काम दूजा।"

गोपीराम—बाबाजी। थारे कैंया रोटी २ लाग गई। कैंया भूखे ब्यायकी क्यु करें लागा ?

मोजोराम—और अठे के झक मारणने आया हा। यो पेट पापीई तो खराब करे है। भूख नई लागतो तो इतणीं दूर लुगायांने एकलो छोडकर कैंया आवता ?

गोपीराम—(मुलक कर) मिश्राणीजी याद आगया दीखे है।

मोजोराम—थे वखत तो क्यु ई याद आवे ना। पेटमें पिलुरिया खडै है।

गोपीराम—पेटका पिलुरियाको उपाय बी हो ज्यासी। पण एकाबर डेरो डाल्डो तो जचण यो। बोलो कठे चाला ?

मोजीराम—कठेई चालणने जगा नई है तो धर्मशाला में चल्या चालो। धर्मशाला तो अठे घणोई होंगी। इतणु बडो सहर है धर्मशाला किसी कोनी होगी के ?

गोपीराम—जिको तो पुछ्यां बेरो पडसी। (एक आदमीने) क्यु जी! अठे कोई धर्मशाला बी है के ?

एक आदमी—हा, है। हरीसनरोड पर तीन धर्मशाला चीतपुररोडकी मोडपर है।

गोपीराम—ऊठे ऊतरणे को आराम है ना? कैं की धर्मशाला है?

एक आदमी—आपण मारवाडीयाकी है। ऊठे ऊतरणे को पूरो आराम है। घोडीपर भोत भलामाणस जमांदार रवे है, सो थाने खाली कमरो बतादेवेंगा जिको ऊंमें ऊतर ज्यायो। एक झाको मुटियो कर ल्यो सो वो थारो असबाब सिरपर धरकर थाने आपई धर्मशाला पुंचा देवेगो।

गोपीराम—झांको मुटियो क्याने बोले है?

एक आदमी—सिरपर छावडी लियां डोले है, जिका मजुर लोगाने। छावडीको नाम झाको है, मजुरको नाम मुटियो है। अठे ये रकमका झांका मुडिया भोत डोलें है। देखो। मैं इबी बुलाता हुं (हेलो मारे है) ये झाका। ये झांका॥

झाको मुटियो—(कने आकर) बोलिये?

एक आदमो—(गोपीराम मोजीराम कांनी हाथ कर कर) ये लोग हरीसनरोडवाली धर्मशालामें जायगे। सो इनको पहुचादे, बोल क्या लेगा?

झाको मुटियो—दू आना लेय।

एक आदमी—दो आना नहीं। खैर। पांच पैसा ले लेना। जाओ जलदी पहुचा दो

झाको सुटियो—बहुत अच्छा (असबाब सिरपर धरकर चाल पड़े है)।

(गोपीराम मोजीराम झाका सुटियाकी गैल २ धर्मशालामें चल्या जावें है)।

---

* प्रवेश दूसरो *

ठिकाणो गोपीरामको कमरो।

(गोपीराम मोजीराम बैठ्या है)

गोपीराम—(मनमें) कलकत्तोबी दाता विधाता है। कालीमाईको खेडो है। अठे आयोडाको गुजरान तो होई जावे है। देशमें सोचे था कलकत्ते चाल कर के धन्दो करांगा। पण भलो हो, विचारे रंगलाल रामगोपालको, जिको बिना जांण पिछाण कपड़ो दे देवे है सो दिनभर फेरी करकर बेचबो करा हा। सञ्ज्याने आगलाको कपड़ो और बेच्या मालकी रकम सम्हला देवा हा। नफाका तीन च्यार रुपया रोजीना मिल ज्यावे है जिका आपणे बच ज्यावें है। रुपया पानसो तो भेला होगया सो इब यो सुगलो काम छोड दीणु चावे। आजकाल कपड़ाकी दलाली चोखी चालें है जिको चेष्टा करणो चावे।

मोजीराम—बोलो, कँया गुमसुम हो रिह्या हो, के विचारमें गोता लगा रिह्या हो ?

गोपीराम—कापडाको टलानो करणेको विचार करांहा।

मोजीराम—के श्राट है। या कापडाको फेरी तो मैं करबो करु'गो। यँकी श्रटवाल तो मने चोखीतरा श्रागई है।

गोपीराम—जणा तो भोतई ठीक रवेगी। बाबाजी थे बी वेई हो—"पूछो श्रापको के नाम, बोल्या बैंगणदास, तो बाबाजीका बाबाजी, तरकारीकी तरकारी।" म्हाने कोनो वेरो थो थे बी इतणा मीनती हो। डोलणें फिरणें में, बात चीतमें तो थेबी जबरा हो। एक नम्बर उस्ताज हो।

मोजीराम—म्हारी वरु बात करो हो। म्हे तो वरतियामें उक्करतियाके साथ हा। म्हे तो वे हा—"खाये बान्दी ऐसा नर, पीर बबरची भिस्ती खर।"

गोपीराम—वाह, महाराज वाह। थारी के कैणु, थे तो थेई हो।

मोजीराम—सेठा। परदेशको मामलो है। अठे श्रालकस कर्‌या कँया काम चाले।

गोपीराम—बात तो याई है। पण हामण होय वे तो कह्या करे है—"मेरी छातीपर बेर पड्यो है जिको मुडामें गेरदे। मैं तावडामें पड्योह जिको छायामें गेर दे।"

मोजीराम—वे श्रोर देखो।

गोपीराम—(स्यामने देखकर) वो देखो, चुंदलियो आवे है। आज अैने खुब छकावो।

मोजीराम—कुण चुदलियो। नैणसुखियो के ?

गोपीराम—हम्बै, वोई है।

मोजीराम—आवण द्यो। आजकाल योबी सोखोनाईको सेस करे है। घरमें तो मुसा कन्ना बातो खाय है। आख्यां में देई सातांकी दुहाई फिर रही है। पण कवे है—"मन्ने घड गई सो वाडमेंई बड गई।"

नैणसुख—(कन्ने आकर) आज के हो रिह्यो है ?

मोजीराम—क्यु आख्यांपर काच फिर रिह्यो है के ?

गोपीराम—अैंया मतना कवो। अ णकी नाम नैणसुख है।

मोजीराम—ओहो। के कैणु' है—

"आख्यां आटो, नाम नेणसुख।"

"पगां पागलो, नाम फुदको।"

"सिरपर खेई, तम्बुमें डेरा।"

"नानो राड कुवारो मरगो, दीयताका नो नो फेरा।"

(गोपीराम हसण लाग ज्यावे है, नैणसुख सरमाकर बेठ ज्यावे है)

नैणसुख—(पेटके हाथ लगाकर) ओहो। पेट कुसके है, दर्द होय है, थोडो चुरण द्यो।

गोपीराम—ज्यादा खा आया के ?

नैणसुख—के बतावा। एक जवा जीमणवार थी सो बठे क्यु वैसो खा आया।

मोजीराम—मर गई राड खटाईका झोल बिना। पेटतो थारोई थो, क्यु नाजको नास करायो ?

नैणसुख—(मोजीरामने) कँया थेको बैको बात करो हो, मिजाज सिड गयो के ?

मोजीराम—थारो सुरत देखकर मिजाज कँया ठीक २ रवे थो ? ये सुरतका घणा सोवणा हो ना। जाण्यु आख होय कीचरोको सो।

नैणसुख—बोल्या तो ये बोल्या। ये तो दोखतकाई फल ऊजला है। वा कह्या करें है—"ऊपरसे बाबाजो दीखे, नीचे खोज गधाका।"

मोजीराम—वाहजो, बछियाका ताऊजी वाह। देखो जाण्यु साचलोई आदमी बोलतो होय। पैल्या आप्याको टावण तो खीचल्यो।

नैणसुख—क्यु ! दालकी पाणीं तो मिल गयो ना ?

गोपीराम—(मोजीरामने) देखो, नैणसुखजीने ज्यादा मत ल्यारो। ये आपको घरवालोने के देवेंगा (नैणसुखने) क्यु जो। आजकाल ये लोग सुगाई कैंका घरमें रवो हो ?

नैणसुख—भोलारामजीका।

मोजीराम—(सुनककर) थारो सुगाई भोलारामजीका घरमें रवे है के ?

गोपीराम—(मोजीरामने) महाराज। थे तो मसकरी करो छो। म्हे तो सीदो बात पूछी थी, थे दूसरे रास्ते ले गया।

नैणसुख—(गोपीरामने) आजकल अंणक अक्कलको उजीरण वेसी हो रिह्यो है। जोसुं मसकरीयाकी सुहाली उतारे है। पण वेरो कोनी अठे अंणका ऊपरला पाट लेठ्या है।

मोजीराम—(नैणसुखने) हम्बे साय। आप हाडाका धणी हो, नालका वावणिया हो। आप तो आपई हो।

गोपीराम—राम। राम॥ या के कही। हाडाका धणी तो भंगी होय है। नालका वावणिया चमार होय है। श्रैंयांकी बात कह्या करें है के?

नैणसुख—ये भंगी चमार म्हाने क्युं कवो। म्हे थोडोई बुरो माना हा।

मोजीराम—होय जिका बुरो कैया मानै।

गोपीराम—(नैणसुखने) बोल्लो, आजकाल क्यु पैदा पिरापतो बी करो के? कापडाको वजार तो भोत तेज गयो। लुगावडीने क्यु गैणे गुठो बी वणाकर दियो के? श्रैं तेजीमें सगला सोनाको तागडी बणाली। थेबी बणाईक कोनी बणोई?

नैणसुख—इवके म्हारे पैदावाडो ढबसारुई-छुई। जणा

ोलो गेणा काठ्यासु बणावे था। मोकलो पैदा होय जणा गेणा बणाया जाय ना ?

मोजीराम—यें बातको के विचार है। आगलीकी कमरमें जोर होगो तो, घणाई गेणा करा लेवेगी। एक ोडकर पांच सोनाकी तागडो हो ज्यायगी।

गोपीराम—(मोजीरामने) बस, जाण द्यो। मसकरी तो रेण द्यो (नैणसुखने) बोलो, म्हारो विचार दलाली करणेको है सो थारे के जचे है, कापडाकी दलाली करण लाग ज्यावा के ?

नैणसुख—अलबत करण लाग ज्यावो। आजकाल कापडाकी दलाली को भोत मोको है सो भगवान चायो तो जल्दी पोबारा हो ज्यायगा।

गोपीराम—काल रामनोमी है। कालसेंई श्रीगणेश कर लेवा।

नैणसुख—बस, बामणनेई पूछणेको काम नई है।

मोजीराम—(नैणसुखने) यो पंडिताईको ठेको थारेई नाम होगयो दीखे है। है, बेमाता! कठे बेठीही।

नैणसुख—(हसकर) टोकणो लेकर चुन मागल्यावो। थाने अण बाताको के वेरो।

मोजीराम—चुन बिना तो या चामडी कदेसको सुक गई होती। बोलो कोन्या आवती।

गोपीराम—(नैणसुखने) चालो, आपा तो घूमण चाला।

मोजीराम—चालो, मैंबी कपडाकी फेरो कयाऊं। थोडी दूर तो सागो रवैगो।

नेणसुख—चालो। चालो।।

(तोनु जणा जावे है)

---

* प्रवेश तीसरो *

ठिकाणो एक मारवाड़ोको मकान।

(मोजीराम बारणे खड्यो है)

मोजीराम—(हेलो मारे है) कपडो लेल्यो।

रामलो—(बारचामें खडो होकर) वो कपडावाला। भीतर आज्या। म्हे कपडो लेवागा।

(मोजीराम भीतर जाण लागे है)

शिवदत्तसिङ्ह—भीतर कहा जई हो ?

मोजीराम—वसोके! म्हानै वैरी कोनी, यो राजा म्हारा जाको दरवार है।

शिवदत्तसिङ्ह—मालुम होय है अभी तुम नये आये हो। तुम का जानो, कुछ रोज यहा रहिहो तो आपुई मालुम होज्याई। हमरे बाबु भीतर जाय खातिर मिन्हाई कर रखीन है।

मोजीराम—या बताव, तेरी क्युं भेट पूजा करणी पडेगी के ?

शिवदत्तसिंह—बस, समज ल्यो।

मोजीराम—अच्छो ठीक है। भीतर जितणाकी चीज बिकेगी जैंको पीसो रुपयो तनै दे द्युंगो।

शिवदत्तसिंह—तब ठीक है। जावो।

(मोजोराम भीतर चल्यो जावे है)

(लुगाया कपड़ो लेवें है, इतणामें एक लुगाई ऊटपटाग बकण लाग ज्यावे है)

मैवली—(मोजीरामनै देखकर) रामका माय्या फेरी-वाला, रातदिन जक्कई कोनी लीण देवें। जद देखो जद छीठासा बैठ्याई रवे है। एक गयो तो एक आयो। या वी कोई सराय समज लई। आजकालकी भू बेटो शाथा रही न बाया। उघाड उघाड मुडानै भाट आ बैठे है। अ याका मोव्यारको इशाई है। जणाई ये छो छो करती, दाताने काडती, फेरीवालासे हासी ठठ्ठा करण लाग ज्यावें है। म्हारला जमानामें अ याकी बात मोट्यार देख लेता, तो जी निकाल लेता। यो नपूतो जमादारियो बी कोई काम कोन्या कर सके, बैठ्यो २ डोड कागकी ज्युं देखबोकरै। बाडीवालो अंनै ड्योडीवान बणायो है (बड बड करै है)

मोजीराम—(मनमें) या के आफत आवे है। या चुडैल सुरपणखा कंकाली कठ्यासे नीकल्याई। या रावणका

वसकी ताडका कठे बाको रे गई? (लुगायाने) या कुण है?

लुगाया—(धीरासी) बोलो मतना। या बणियाणी है। सगली बाडीने हदर कर राखी है। सुण लेगी तो और भाड गेरेगो। पिंडी छुटावणु मुस्कल हो ज्यायगो। वडी करकसा है।

मोजीराम—खैर! क्युंई हो। अैंको डौल देख कर मेरे तो एक कवित्त याद आ गयो जिको अैंने जरुर सुणाऊंगो।

लुगाया—थारी खुशी। या ल्यो, म्हे तो जावा हां। थे क्युंई सुणावो पण थारो जावतो कर लियो। कदे इसी न हो जो की ध्यारो मड ज्याय। अठासु उठण मुस्काल होज्याय।

(सगली जणी चली जावें है)

मोजीराम—(मुलककर) क्यूंई हो, देखी जासी (जोरसें बोले है)

> येरी राड बणियाणी, तोकु ध्यार खुड जाणी,
> जरा प्यावत ना पाणी, घर आया बेटाऊने।
> मूसे बोलत है खारी, नेक दयाहु न धारी,
> तु है पूरी हतियारी, समजत ना स्याऊने।
> वहे नासामें सरडा, है हाथ भोत करडा,
> तेरे बालामें जरडा, बोलत ना तमीज है।

ऐसी सुगली लुगाई, तेरे दातोंकी सफाई,
विधनेस ना लगाई, ना डाकण क्या चीज है।
(सब कोई हसण लाग ज्यावें हैं)

भेबली—(लोटो हाथमें लेकर) खयोसो रए रामका माखा। तम्ने मजो दिखाऊ। आयो है हरक्यु २ सुणा' वणने (मोजीराम कानी आवे है)

मोजीराम—(मनमें) आई है, चडो। इब घठे बैठ्यो के धई में हाथ देवे है। कर दे है, मायो लाल। घ्रेमें को सिट्टो निकाले है इब तो भागणु ई ठीक है। (ऊपरसे) ले और सुणाऊ।

"रावडीमें राख राधे, चुन चाटे पीसती।
देखोरे करकसा राड, चाले पग्गा घीसती॥"
(मोजीराम जावे है)

❁ प्रवेश चौथो *

ठिकाणो भोलाराम भीवराजकी दूकान।

(भोलाराम बैठ्यो है)

भोलाराम—(मनमें) धन्य, ईश्वर तेरी माया। भागवानसे' भिखारी और भिखारीसे भागवान करण तो तेरा बाया

हाथको खेल है। इबकै कापड़ैको तेजी होणेसे, कई आद-मियाको तो पाचू आगली घोमें होगई, पौबारा हो गया। कई बिचारा सफाचट्ट मैदान गलियाराका गीड होगया। या सब विधाता तेरो लोला है। हानि और लाभ सब पर-मात्मा तेरे ई हाथ है। महाराज तुलसीदासजी वी तो कही है—

"अहो भरत भावी प्रबल, बिलख कहे मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥"

(इतणामें शिवकुमारजी आवे है)

भोलाराम—पडतजी। पायै लागू।

शिवकुमार—बाबूसाहब। खुश रहो।

भोलाराम—पडतजी या के बात है। आजकाल महा अधर्म्मी है जिका लखपती किरोडपती हुया जावें है। यो कलयुग कोई प्रभाव हैं के?

शिवकुमार—उनका पूर्व पुन्य कुछ बाकी है। इसीसे वे बढते है। कहा भी तो है—

"जबतक तेरे पुन्यका, बीत्या नहीं करार।
तबतक तेरो माफ है, औगुण करो हजार॥"

भोलाराम—असल बात तो पडतजी याई है। कई आदमी अनेक रकमका कुकर्म करें है, येनकेन उपायसे द्रव्यसंचय करणु आपको प्रधान धर्म्म समझे है। जैपर वी वें रात दिन बध्या जावें है। और जिका सतसे ईमानसे चालैं

है वे धनहीन हुया जावें हे। या कितणी अचबाकी बात है।

शिवकुमार—देखना, बाबू साहब! इन पापी धनवानोंसे वे गरीब धर्मात्मा बहुत अच्छे रहेंगे। अन्तमें भलेका भलाही होगा। ईमानदारी रहनेसे गरीब पुन लक्ष्मीवान हो ज्यायगें। कहाबी तो है—

"सत मत छाडो बावरा, सत छोडे पत जाय।
सतकी बान्धी लच्छी, फेर मिलेगी आय॥"

(इतणामें गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(भोलारामने) बाबू साब! जयगोपाल। बोलो, वयु लेस्यो वेचस्यो के?

शिवकुमार—(भोलारामने) बाबु साहब! हमको तो हुकम हो। हम तो चले हैं।

भोलाराम—जावोगा के?

शिवकुमार—हा! तो, इस वखत आपके व्यापारकी टाईम है, सो इसमें बाधा डालना उचित नहीं।

भोलाराम—(मुलककर) अच्छा तो पधारो! फेरु आई यो।

शिवकुमार—ठीक है (जावे है)

भोलाराम—(गोपीरामने) थे कपडाकी दल्ाली करो हो के? पैला तो थाने कदेई कोनी देख्या। इब नयाई खड्या हुया दीखो हो।

गोपीराम—हां। मैं आजसे ई कपडाकी दलालीमें खग्यो हुयो हुं। पैला पोत थारे कन्नेई आयो हुं। सो आज तो क्यु ना क्यु सोदो जरूर बतावणु चाये।

भोलाराम—बस के, पेला म्हारे ई कन्ने आया हो के? अच्छा जावो, पचास गाठ कम्पनी मारको लियावो, पण (सावलराम कांनी इसारो करकर) आदी दलाली अणने देणी पडेगी।

गोपीराम—(मनमें) या खूब हुई। वा कह्या करे है—"ऊपरसे गिग्यो तो, खिजूरमें अटक्यो" (ऊपरसे) ये कुण है?

भोलाराम—ये तो म्हारे भीवेका मामा है।

गोपीराम—(मनमें) अ कलकत्तानि तो मेरा मटा सालाई सर कर लियो। सुकती फार्म्माके मालकांकी नकेल आपका हातमें ले लई। या दलाली तो ढबको रे गई। बिना परसंग वर्यांकी दलालो, म्रतगाघला कारणा है। अ मालकाकी बुद्दी तो साला गुद्दी पीछे कर दई। साची बात है—"भीतने खोयो आला, घरने खोयो साला।" पण कुछ परवा नई, एक कवित बडा बाबूने सुणाकर अंको चूद तो खोल देणों चाये। घणीं करेगा तो दलाली कोनी बतावेगा। सो के बात है? वा कह्या करे है—"गणगोर रूसेगी तो आपको सुहाग राखेगी।" (ऊपरसे) बाबु साब, ये लोग सालाकी भोत पकास करो हो, सो एक कवित तो सुण ल्यो।

भोलाराम—(मुलककर) के कवित है ? देखा सुणावो।
गोपीराम—(मुलककर) ल्यो सुणो।

"बीनणीको भाई जाण, तन्ने मैं सुपो दुकान,
तकियाके स्हारे बैठ्यो, मौज तु उडाया कर।
जित्ता हैं नोकर मेरे, रहै से अधीन तेरे,
गद्दी ऊपर बैठ्यो तु, हुकम चलाया कर।
हिसाबकोनई दावो, थारे जचै सो लिखावो,
आप खुब खावो चावे, घराने पूचाया कर।
गाडी जुतवावो बैठ्या, मोटरमे हवा खावो,
भैणके परतापसे, मौज तु उडाया कर।"

सब जणा—(हसकर) वाह, वाय। यो कवित तो
। सोवणु सुणायो। देखो के के नाका घ्याया है।
भोलाराम—(मुलककर) ये तो दलाल भाइ है ना।
मी बात बणाया बिना कैंया काम चाले। दो दुकानदारा
सिर जोडणु हासो खेल थोडोई है। भोत मुस्कलको
र है।
सावलराम—(गोपीरामने) थे बी तो कोईका सौला हो।
गोपीराम—म्हारोबी भणेई लखपती हो तो, तो थारी
म्हारी ना कदर हो ज्याती।
भोलाराम—(सावलरामने) ल्यो सुणो। कयु और
ानी बाकी है तो और सुण ल्यो।
(सावलराम मू नीचो कर लेवे है)

गोपीराम—(भोलारामने) ओलो, गाठाके वास्ते कै हुकाम होय है?

भोलाराम—हां, जावो। पचास गाठ बीस रुपयाके भावमें लिखावो दल्लाली थारी पूरी रे ज्यावैगी।

गोपीराम—बाबू साब! भोला ढालाको राम रुखालो थारो तो नाम है, जिसाई रिह्या करो। सेठ तो भोला ढालाई हुया करें है।

भोलाराम—बाबाजी, म्हे क्याका सेठ हा।

गोपीराम—लिछमीवान् हो। मूंडा आगे मोकलो रुजगार है, सब दाता ईश्वरको दीन है। आप सेठ ही हो।

भोलाराम—मैं तो सब भायाको दास हूं। गोपीरामजी, के पूछो हो। घणीई विपत भोगी है। (सिर दिखाकर) या देखो, मोट ढोवता २ मेरी टाट गजी हो गई। या तो अठे आया पीछे कालीमाई सुण ली, जणा दो पीसा चोखा पैदा हो गया। जे वखत गरीबी हालत थी, ऊ वखत मेरा मटा सें जणा मूंडा मोड मोड चाले था। ये सगला ईंवी खुशामद करण लाग्या है। सो म्हे तो देख ली आदमी की ढलती फिरती छाया है जिको जो कुछ बणतीमें आवे सो गरीबको उपकार करणु चाये।

गोपीराम—बसके! म्हे तो म्हारे ई वास्ते समजेथा कि, दुनियामें थेंई गरीब हो, थेंई या विपता भोग रिह्या हो।

बात सुणकर तो यो विश्वास बो होय है कि, कदे ना म्हारो दिन बी बावडैगो।

भोलाराम—सो के बात है। नीत साबुत राख्या, हिम्मत घोडे सवार रिह्या तो जरुर बावडैगो। नीत खराब था, हिम्मत हार ज्यायास क्युं ई होयना। क्यु को ईमान-दीका पिसाने वढता देर कोनी लागे। कबोरजी बी तो ही है—

'कवोर कुमाई आपकी, कदे न निस्फल जाय।

बोवे पेड बबुलका, आम कहासे खाय॥"

गोपीराम—हा। या तो ठोकई है। नीत गेलई बरकात । तथा आदमोका कर्म बी चोखा होणा चायँ। चोखा र्मांसं सब पदार्थ मिल्न सके है। कर्महीनके वास्ते ससारमें छबी नई है। 'महाराज गुसाई तुलसोदासजी ठीक कहो कि—"सकल पदारथ है जगमाही, कर्महीन नर पावत ाही।"

भोलाराम—या बी ठोक है (ठहरकर) जावो! यो ाठाको सोदो तो ई पक्को कखावो ज्यु थारो दलालोको हुरत तो ठीक हो ज्याय।

गोपीराम—थारी इतणीं मेहरवानगो है, जणा थारे स्यामने ुठ बोलणु बी ठीक नई। मेरे कने थेंई भावको रंगलाल तीको परवानगो वेचणीको है, सो मांडल्यो।

भोलाराम—जणा के आट है (बही में लिख लेवे है)।

गोपीराम—अच्छा तो मै चालु हु। जयगोपाल।

भोलाराम—जै गोपाल!

(गोपीराम जावे है)

⊛ प्रवेश पांचवों ⊛

ठिकाणो गोपीरामको कमरो।

(गोपीराम मोजीराम बैठ्या है)

मोजीराम—(सुत्यो सुत्यो गावे है) "आया धमेडा, रूपकमेडा मारा भचेडा ह्हरमें।"

गोपीराम—ऐंया ऊटपटाग ढडारा गीतके गावो। आज तो एक निहलदेकी कडी सुणावो।

मोजीराम—ल्यो। निहालदेकी सुणो—

"ऊजड खेडा फिर वसे, निर धनियां धन होय।
गयान जोविन वावडे, मुवायेन जिन्दा होय॥"

गोपीराम—वस, रैंणद्यो, सुणलियो। यो तो कालेजा माकर पार हो गयो। इब तो मुरलिया छोराने जल्दी बुलावागा। आजई जाकर तार देवांगा।

मोजीराम—थे तो मुरलो छोराने वुला लेवोगा पण या बतावो क्रैंके करागा?

गोपीराम—थे वो मिश्राणीजीने बुलालियो। एक छोटो कमरो लेकर रैवो करियो।

मोजीराम—म्हे तो देशमेंई राखस्या। मिश्राणीनें अठै बुलाकर किसो बणियाकी शिकार बणाणो है। थारो आज स्यात मेंई प्रेम कैंया उजल्यायो ?

गोपीराम—वो थारलो निहालदेको दुवो गजब धाल गयो। कालजा माकर पार होगयो।

(इतणामें मगतूराम आवे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) देखो, स्यामने मंगतूराम आवे है, सो अँसेई हाँसी ठट्ठा करो ज्यु चित तो खुसी होय। यो पचास बरसको हो गयो पण अँकी हालताई सगाई कोनी हुई है।

मोजीराम—बसीके, जलम राँडियोई है के ?

गोपीराम—(धीरासी) हम्बै। चुपचाप रवो।

मगतूराम—(आवतोई) कैंया पड्या हो ? जाणु नम्ही भुवाकर ढिगारै गैर गई होय। के सल्ला है ?

मोजीराम—केसुला तो पसारिया के है। आवो थेवी पड ज्यावो।

मगतूराम—म्हे किसो लुगाई हा, पड ज्यावां।

मोजीराम—थे लुगाई सार के जाणु। वा कह्या करें-है—"बन्दर के जाणें अदरख को सुवाद।"

मगतूराम—वा, थे के समजो हो? वा कह्या करे है—"व्याया कोनो तो जनेत तो जरूर ई गया हा।"

गोपीराम—(मोजीरामने) मंगतूरामजीने थे के कमतो समजो हा। वा कह्या करे है—"छु तो गावकी वेटी, पण भू वा सें बी वेसी पडु छु।"

मोजीराम—या भलाई हो। पण थे देख लियो, ये कुवारा आगला जलम में कुत्ता हांयगा। भू भू करता डोलेंगा। देखो, थानें एक कुवारा को कवित्त सुणाऊ।

"जो दुनिया में कुवारो, वाको धृक है जमारो,
प्रभू नेक दया धारो, सुफल जिन्दगानी हो।
ऐसी के मैं कोनो चोरी, दोनो नही एक गोरी,
वेगही मिलावो जोरी, ऐसी महरवानी हो।
सुनोजी लगाके कान, कुवारेको वचे ज्यान,
देवो एक नार दान, बावरो वा दिवानी हो।
या कुंवारेको पुकार, थे सुणियो करतार,
वकसद्यो एक नार, चाये अन्धी या काणी हो।"

गोपीराम—वस। वस।। रेणद्यो। मगतूरामजी न ज्यादा कायल्न मतना करो। कुंवाराका किसा न्यारा गाम वसे है।

मगतूराम—म्हाने थे के कायल करस्यो। म्हे तो आप चादसा भैंसा हा।

मोजीराम—(मगतूराम कानी हाथ करकर) हे सीतला माता। ठण्डका झोला देई।

गोपीराम—(मगतूराम कानी इसारो करकर) येतो बारा बरस कलाग गया।

मोजीराम—बारा बरस कलाग गया तो अे है? व्या नई होय जितणै टाबरई समजणो चाये।

गोपीराम—(मगतूरामने) खेर, हासी ठट्टा तो जाणद्यो, या बतावो दलाली में तो पेटा लिवाडी ई होवे है सो इसो कु णसो काम करा जेंका करणासे पेदा पिरापती चोखी होण लाग ज्याय?

मगतूराम—रूईको पाटियो करल्यो। आजकाल तेजो चाल रही है सो मोको देखकर साचो डाव धरद्यो। भगवान चाये तो गेरा हो ज्यायगा।

गोपीराम—ठीक है, या मेरेवी जच गई। काल सेतोई यो काम सरु करागा। कालको दिनवी चोखो है। दलाली में बाबुजी, बाबुजी कहता २ कंठ सुख गया। गोडामें पाणी पड पयो। इबो बाड़ामें चालो दुकान भाडे लिखायावा। छारे वारेई डाकघर है जिको सुरलिया छोराने बुलाणेको तार यो दियावागा। एक पन्थ दो काज होज्यावेगा।

मगतूराम—भोत ठीक है। चालो।

मोजीराम—(मगतूरामने) देखियो, सीडियामें चोकष उतरियो। पड़ो तो हाथ आगेने काढ दियो।

मगतूराम—म्हारो फिकर मतनां करो। थे थारो निगै राखियो (नाड हलाकर)

"कृष्ण नाम लड़वा, गोपाल नाम घी।
माधवनाम खीरखाड, घोलघोल पी॥"

मोजीराम— वाहजी, सीतला वाहनजी। क्या बात है।

(गोपीराम मंगतूराम चल्या जावे है)

---

* प्रवेश छट्टो *

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरको दुकान।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) भाग चक्कर घूमतो है। मुरलीया छोराको पग फेंरो हुयो तो है। अणके आवताई गैरा होगया। इब जिका काममें हाथ घाला हा तुरत फायदो होज्यावे है। ये सब सुदा दिनवाई लीछण है। एक लाखको इष्टाक तो आजताई होगयो इब के है इब तो ऐसे घणोई मार बैठो करागा। आपणे ऐं बखत रुईकी तेजी को घणुंई व्यापार है। रुई दिन पर दिन तेज होती जावे है। आज डाव एकठोई लगा दियो है जिको केतो दस बीस लाख तुरत

मंगलूराम—म्हारो फिकर मतना करो। ये म्हारी निगे राखियो (नाड़ हलाकर)

"लछ नाम लड़ुआ, गोपाल नाम घी।
माधवनाम खीरखांड, घोलघोल पी॥"

मोजीराम— पाछलो गीतमा याद्दनजो। क्या बात है।

(गोपीराम मंगलूराम चल्या जावे है)

---

* प्रवेश छठो *

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरको दुकान।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) भाग चक्कर घूमतो है। मुरलीया छोराको पग फेरो हुयो तो है। भांगके आवताई गेरा होगया। इब जिका काममें हाथ घाला हा तुरत फायदो होज्यावे है। ये सब सुदा दिनवाई तीछण है। एक लाखको इस्टाक तो आजताई होगयो इब के है इब तो ऐसे घणोई मार बैठो कराला। आपणे अबे तखत रूईको तेजी को घणु'इ व्यापार है। रूई दिन पर दिन तेज होती जावे है। आज डाव एकठोई लगा दियो है जिको केतो दस बीस लाख तुरत

फुडत मिल ज्यावेगा। के पैला जिसा ही ज्यावागा। दीप-दारी होज्यावेगी तो कुमाकर दे देवागा।

(इतणामें घींगाराम आवे है)

गोपीराम—(घींगारामने देखकर मनमें) आज यो घींगो देशसे अठे कँया आगयो (ऊपरसे) आवो। घींगा-रामजी।

घींगाराम—आगया ना। म्हे देशमें सुणी इबके तो गोपीरामजी लखो मार दियो। या बात सुणकर चित्त भोत खुशी हुयी।

गोपीराम—ठीकई है। आपवालाको तो जो राजीई हुयो चावे।

घींगाराम—(सरमातो हुयो) एक काम है।

गोपीराम—बोलो? सरम सकोच करणेकी कोई बात नंई है। थे थारा दिलमें कुछ विचार मत ल्यायो। वे बात तो वेइ थी इब ऊ बाताको के विचार है।

घींगाराम—जगन्नाथजी जाकर आया हा सो खरची निमड गई रुपया पचीस चाये है।

गोपीराम—(एकसौ रुपया को नोट हाथमें लेकर) ल्यो। लेज्यावो। थारे काम हु जणा धर्म खाते लगा दियो। मने पूछणे को और भेजणे को दरकार नई है।

घींगाराम—(रुपया लेकर) सेवारामजी बी आया हैं।

गोपीराम—हैं! कद आया? कठे उतर्या है?

घीशाराम—देशमें वेच्या २ सोदा सट्टा य़च्या जिको नुकसान गैरो लाग गयो। रुपया पाच हजार गायका दीणा रह गया जिको रात्युरात टाबराने लेकर अठे आया हूँ। थारे कन्ने आवता क्यु सकोच करे था पण मैं कह आयोडु सो आवताई होसो।

(इतणामें मोजीराम आवे है)

घीशाराम—(मोजीराम कांनी हाथ जोडकर) डंडोत महाराजी।

मोजीराम—(मुलककर) सुखी रहो। बोलो। गिंवाको के भाव है? याट है क ना?

घीशाराम—(सरमाकर) थारे जचे सो,कवो एव घणई पिस्तावो है पणके कच्यो जाय गई बातने तो घोडाई कोनी नावडै। लाव पग तलासें नीकलगी सो नीकलगी (मुह नीचोकर लेवे है)

(इतणामें सेवाराम आवे है)

सेवाराम—(मोजीरामने) महाराजी डंडोत।

मोजीराम—सुखी रहो। चिरंजीव रहो।। वाहीं बावडो को बाता? बावडी कैंया छोड्याया?

सेवाराम—(सास मारकर) भगवान छुडा दी जणा छोड्याया।

गोपीराम—(सेवाराम का पगामें धोक खावार), आवो। ऊपरने बैठो।

सेवाराम—लालजो। इब म्हे ऊपरने बैठ्या लोयका तो रिह्या। भगवान एक बरतो म्हाने घेले सस्ते कर या। श्रै बखत म्हारे सें जमीनको धून बी चोखो है।

गोपीराम—बाबाज, योके बिचार जीवमें ल्यावो हो, रज राखो सा ठोक हो ज्यायगो।

सेवाराम—रुपया पाच हजार गावका देणा है सो जिके न वै रुपया देवागा जणा जियाका जलम पावागा।

गोपीराम—श्र बातेको के फिकर है (पाच हजार का ट हाथमें लेकर) ल्यो। ये देश भेजकर मागततो चुकवाद्यो। ई एक काम करो घेई पाछा देश चल्या जावो। हरिप्रसाद मप्रसादने मेरे कन्ने छोड ज्यावो। पण देखो इब देशमे दो सट्टो बिलकुल मत करियो। होय जिसा कामको श्रापणो हाल राखबो करियो। देशका.येई मालक रिह्या। थारे चै लागे सो हुन्डो करबो करियो।

सेवाराम—ठीक है। म्हे श्रौर घीशाराम से जणा सागेई ल्या जावागा। छोरा तेरे कन्ने रहबो करेंगा। देख, ाला! मेरे कानीको कोई रकम को जीमें ख्याल होय तो ाफ करिये।

गोपीराम—राम! राम!! या के कमो हो। मेरे तो माईता ममान हो (घीशारामने) देखिये, श्रापने चोखो रा लेज्याये। श्रौर पाच ष्यारसो रुपया तन्ने कदे चाये तो

अ'णसें लेवो करियें (सेवारामने) घीशारामने पाच ध्यारसो रुपया चाये जणां थे देवो करियो।

सेवाराम—भोत ठीक है।

घीशाराम—अच्छ्या तो जावा हा। जयगोपाल।

गोपीराम—अच्छो भोत राजी २ जायो।

सेवाराम—मैंबो जांऊ हुं।

गोपीराम—हा। पधारो भलाई।

(सेवाराम लुगाया पतायानि साथ लेकार घीशाराम की साथ देश चल्यो जावें है, हरिप्रसाद रामप्रसाद गोपीरामकी दुकानपर काम करण लाग ज्यावें है)

प्रवेश सातवों

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरकी दुकान।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) साचो बात है। कालकत्तामें एक रात में गरीब सें लखपती और एकाई रातमें लखपती सें कंगाल होज्यावे है। दो दिन के भीतर बीश लाख रुपया मिल्या है। इब के है, इब तो अठेका बडा बाबु जिका नाक

मूंडो मोश्या करता, जयगोपाल को जवाबई कोनी दिया करता जिका मत्तेई उचे वठावण लाग ज्यावेंगा। कुसा मदिया टह्याकोस गिणतोई वे है, वैतो घणाई ग्राची गोपाल हा मे हा मिलावणिया हाजरी दींगा। सभा सुसाईटियां मायवो इब मान तान चोखो हो ज्यायगो, जिको सभामें मेम्बर भोत कोसोस से वणावे था ऊ इ सभामें सभापती को श्रासण पेलां पोल मिलेगो। या सब पिसा तेरोई माया है। पिसा विना श्रादमो को कयूं ई मोल ना। कह्यो वी तो है—

"पिसा विन बाप कहै, वेटो भोत कतगयो,
पिसा बिन भुटू कहै, घरकोई लुगाइ है।
पिसा विन भाई बन्द, कन्ने नई बैठण दें,
पिसा विन सासु कहै, किसको यो जवाई है।
पिसा विन भायेलाबो, देख मुडा मोड चलें,
पिसा विन भाण कहै, यो मेरो नई भाई है।
पिसा विन देखो कुक, दुनीमें श्रादर नांय,
पिसा बिन श्रादमोको, ईज्जत नई पाई है।"

रामप्रसाद—(मनमें) देखो, ईश्वरको माया है। यैंसे कदे मुडासें कोनी बोलता, यो जराबो बोलतो तो झाड देता, गोपिया सिवाय कदे वडी बोली में बोल्या कोन्या। पण वाहरे पिसा श्रौर वाहरे तकदीर। इब श्रैंनेई बाबुजो २ कहणु पडे है। श्रैंकी वो छातोने धन्य है जिको ऊ बात को

खयान नहीं करकर झट पांच हजार रुपया एक मुष्ट निकालकर देदिया। गांवको करज चुकती करवा दियो। गावमें रैण जोगा कर दिया। थेंको यो गुण जलमभर नई भूलणु चावे। देखो, या सुपना मे बी आशा नहीं थी कि, म्हारी या दशा हो ज्यायगी और थेंको दिन इस माफक सिकन्दर हो ज्यायगो। मनमें के के बिचार कख्या करता पण मनका के टका उठे है। साची कही है—

"मन चाये माया करु, करकर करु गुमान।
साई हाथ कतरनी, राखेगो जनमान॥"

(गोपीरामके नजीक जाकर) बाबुजी, आज, तो रोकड में दश लाख रुपया पड्या है सो के करणी चाये?

गोपीराम—एक काम करो बक बंगाल हेड आफिस में भेजकर जमा करवा द्यो।

रामप्रसाद—भोत चोखो जी।

(इतणामें भोलाराम आवे है)

भोलाराम—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी की।

गोपीराम—आवो! जयगोपालजीकी! ऊपरने, बैठो।

भोलाराम—बाबाज, ऊपर नीचे सब एकई माया है। म्हे तो सुणी आजकाल मे काली माईको कृपासे थाने दो रुपया भोत चोखा मिल गया है। सो सुणकर भोत खुशी पैदा हुई। मनमें विचार कख्यो चालकर निसचे तो करणी चाये। देखा साची बात है वा झुठी।

गोपीराम—(नम्रताई सें) हां। आपकी दयासें इदरसे
ोखोई मासो हुई है। या सब रिदरोपना थारोई है।
ला पोत पचास गाठको दलालो की थे म्हूरत करायो थो
ंके बाद वारान्यारा होताई गया।

भोलाराम—सब परमात्माको माया है (धीरासी) एक
काम है?

गोपीराम—बोलो, फरमाओ?

भोलाराम—रुपया पचास हजार चायें है। भोत भारी
डास लाग रह्यो है। आज हुन्डी पूगे है। नई दीणेसें
ाबरू जाती रहेगो (आंख भरकर) ये वखत थारे सिवाय
ोइ म्हारो दीणवालो नई है। या इज्जत राखणी और
ोवणी थारे हाथ है। इज्जत बच जावेगी तो पैदा घाडो
णोई हो ज्यायगो। और कह्या करे है—"जावो लाख
ौर रहो साख।" इज्जतको गलई सगला भलावाना है।
ज्जत नई बचेगी तो ये वखत माटीमें मिल ज्यावागा।

गोपीराम—(धीरज बन्धाती हुयो) घवडाओ मतना।
ा ठीक हो ज्यायगो (रामप्रसादने) रामप्रसाद! पचास
जार रुपया भोलारामजोने देदे. भोलाराम भींवराज के पैंचा
ाते नाव माड दे।

रामप्रसाद—(पचास हजार का नोट तिजुरीसे निकाल
र) ये ल्यो। भोलारामजी।

भोलाराम—(रुपया लेकर) आच्छो तो मैं जाऊं हुं

खयाल नहीं करकर भट पांच हजार रुपया एक मुंट निकालकर देदिया। गावको करज चुकती करवा दियो। गावमें रैण जोगा कर दिया। थैंको यो गुण जलमभर नई भूलणु चावे। देखो, या सुपना में वी श्राशा नही थी कि, म्हारी या दशा हो ज्यायगी और थैंको दिन इस माफक सिकन्दर हो ज्यायगो। मनमें के के विचार कथा करता पण मनका के टका उठे है। साखी कही है—

"मन चाये माया करू, करकर करू गुमान।
माई हाथ कातरनी, राखेगी ऊनमान॥"

(गोपीरामके नजीक जाकर) बाबुजी आज तो रोकड में दश लाख रुपया पड्या है सो के करणो चाये?

गोपीराम—एक काम करो बक बगाल हेड हाफिस में भेजकर जमा करवा द्यो।

रामप्रसाद—भोत चोखो जी।

(इतणामें भोलाराम आवे है)

भोलाराम—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी की।

गोपीराम—आवो। जयगोपालजीकी। ऊपरने बैठो।

भोलाराम—बावाज, ऊपर नीचे सब एकई माया है। म्हे तो सुणी आजकाल में काली माईको कृपासे थानें दो रुपया भोत चोखा मिल गया है। सो सुणकर भोत खुशी पैदा हुई। मनमें विचार कयो चालकर निसचे तो करणी चावे। देखा साची बात हैं वा भुठी।

गोपीराम—(नम्रताई सें) हा! आपकी दयासें इदरमें चोखोई प्रासो हुई है। या सब रिदरोपना थारोई है। पैला पीत पचास गाठकी टलानो को थे म्हुरत करायो थो जैके बाद वारान्यारा होताई गया।

भोलाराम—सब परमात्माको माया है (धीरासी) एक काम है ?

गोपीराम—बोलो, फरमाओ ?

भोलाराम—रुपया पचास हजार चाये है। भोत भारी घडास लाग रही है। आज हुन्डी पूगैं है। नई दीशेसें आबरु जाती रहेगो (आंख भरकार) अ' बखत थारे सिवाय कोई म्हारो दीणवालो नई है। या इज्जत राखणी और खोवणी थारे हाथ है। इज्जत बच जावेगी तो पैदा वाडो घणोई हो ज्यायगो। और कह्या करे है—"जावो लाख और रहो साख।" इज्जतको गेलई सगला भलावाना है। इज्जत नई बचेगी तो थ' बखत माटीमें मिल ज्यावागा।

गोपीराम—(धीरज बन्धातो हुयो) घबडाओ मतना। सा ठीक ही ज्यायगो (रामप्रसादने) रामप्रसाद। पचास हजार रुपया भोलारामजोनें देदे, भोलाराम भीवराज के पेचा खाते नाव माड दे।

रामप्रसाद—(पचास हजार का नोट तिजुरीसें निकाल कर) ये ल्यो। भोलारामजी।

भोलाराम—(रुपया लेकर) आच्छी तो में जाऊं हु'

हुन्डीवाला बेठ्या हैं जिको कंपने भुगताय देकर नक्को करू।

गोपीराम—हां। जावो। (भोलाराम जावे है)

(इतणामें नेणसुख मगतूराम आवे है)

नेणसुख, मगतूराम—(हाथ उठाकर) बाबुजी! जय गोपालजीकी।

गोपीराम—जयगोपाल। आवो, आज जुगल जोडी कैंया आई?

नैणसुख, मंगतूराम—के आया हा। इब तो म्हानें बी कोई भलेरोसो रुजगार बतावो। म्हे तो याई बाट, देखे हा जिको कालो मार्ई सुणई लई।

गोपीराम—थानें तो जरूरई बतावांगा। एक काम करो हुन्डियाको दलाली करण लाग ज्यावो।

नैणसुख, मगतूराम—भोत ठीक है। आजसेंई सही। बोलो। पैला पोत थे के बतावोगा?

गोपीराम—जावो दो लाखकी कालकत्तो (सुदती हुन्डी कालकत्ताकी) ठीक जचाई करकर लियावो भावमें कसर नई लाग ज्याय।

नेणसुख, मगतूराम—ठीक है। भाव कानी सें तो थे सी हाथकी सोड में सोवो। (दोनों जावे है)

(इतणामें रंगलाल आवे है)

गोपीराम—(खडो होकर रगलालनें) आवो, सेठ साब! जयगोपालजीको, आज कैंया पधार्या?

रगलाल—जयगोपालजीकी। क्यां का सेठ साव, धार्या तो भाई हा। सब एकई माया है।

गोपीराम—या तो क्यु कवो। म्हारे तो थे सेठई हो। थारो गुण थोडोई भूला हा। साची पूछो तो थे म्हाने के जाणे था। पण कितणी मातबरी करे था। थे इतणु' स्हारो नई देताती थे कलकत्तामें म्हारा पगई कोनी जमता। सेठ साव। थारो गुण म्हे भूलणेका नंई हा। गुणने खराब आदमी होय जिका भूल्या करें है।'

रगलाल—बात तो याई है। कही बी'ली है—

" हरदी जरदी नां तजे, खटरस तजे न आम।
सीलवत गुण ना तजे, गण को तजे गुलाम॥"

गोपीराम—आजकाल आपके रुजगार बाडोका के हाल हैं ?

रगलाल— फिकाइ हाल है। इदर में म्हे रुपयो भोत खो दियो।

गोपीराम—क्यामें खो दियो ?

रगलाल—एक आदमीका फेरमें आगया। वो सोनाका म्हल दिखाकर पेला तो म्हारा नाम सें खुब सोदो कर लियो, पीछे जद ज्यादा घाटो होगयो जणा नटकर नाकै होगयो।

गोपीराम—थे इतणा हु'सियार समजदार होकर कैंया ऊंके फेरमें आगया ?

रगलाल—फेरमें के आगया हु णी के बस होगया। काछा बी तो करें हैं—

"जैसी हो होतव्यता, वैसी उपजे बुद्ध।
होनहार हृदय बसे, बिसर जात सब सुद्ध॥"

गोपीराम—या ठीक है। मेरे लारू कोई काम होयतो के दियो। सकोच मतनां करियो।

रंगलाल—रुपया दो लाख की मदतकी दरकार है।

गोपीराम—रुपया तो थाराई है लेल्यावो। (रामप्रसाद ने) रंगलालजीने दो लाख रुपया दे दे। रंगलाल राम गोपाल के नांवें माड दे।

रामप्रसाद—(दो लाखका लोट तिजुरी में निकाल कर) रंगलालजी साब,, ल्यो!

रंगलाल—(रुपया लेकर) गोपीरामजी इब तो मैं चालु हु (मनमें) गुण मानणु नाम श्रें को है। साचो मदत श्रेंने कह्या करें है। ऊपर सें क्यु ई बोले भींतरमें क्यु ई घाटा घडियो राखे आत्माकी चोरी राखकर आत्माके विरुद्ध बात करें जिका बी कोई आदमी है? वे बिना सींग पूछका पसु है। इसा आदमियाने चोरावे ले ज्याकर गाडें।

गोपीराम—मैं बी घरा जाऊ गो, चालो सागेई चाला।

(दोनों जावे है)

दुसराक समाप्त।

अंक तीसरो।

प्रवेश पैलो

ठिकाणो घमडीलाल गिरधारीलालकी दुकान।

(घमडीलाल बैठ्यो है)

घमडीलाल—(मनमें) साची बात है—"माया मद मो मद, ओर मद सब रद।" माया पाकर घमंड नंई कर्यो तो जगमें आकर के कर्यो। लोग पीसो पीसो करता, धातियो माई धातियो माई करता डोले है, वे निरा काठका उल्लू है। अठे तो जठीने निजर फेरांछा, पीसोई पीसो नोजर आवे है। मैं बखत तो बेटा पोताकी घी खुब ल्हर है। रुपया एक किरोड साचा है। पीछे ओर रुपयाने छोता के बार लागे है। रुपया तो बात की बात में पैदा हो ज्यावें है। मने तो अंण सगा सोयाकी, भाई बन्दाकी, गरीबडियांकी लीला देखकर पूरी हांसी आवे है। मेरा मटा मने किरोडपती समज कर, मेरी हजारो अटकलसे, रुपया लीयाने मु लीपकाता चल्या आवे है। मैं अंण मूरखांने के समजु हु। मने अंणकी के गरज है। मैं निरा

उठाकर कं'ण कानी देखई कोनी। दलिदरियाने देखकर तो मर्म सरमई भीत भावे, मेरे कमे कगाल को के काम। पण मैं‌ बी जबरोछु। मेरे कने ये लोग आवे जणा इसी इसी खुनस काडण लाग ज्याऊ, जिको अ ण को खायो पियो सो बल ज्यावे। आगेने आपणे कने आवणई जुगता कोनी रवें।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्यु। कैंया आया हो? थारी दुकान पर आज काम कोनी के?

रगलाल—(मुलकाकर) थारा दरशण करणने आगया।

घमडीलाल—(लापरवाईसे) दरशण करणा हों तो मन्दर में जावो।

रगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल हैं?

घमडीलाल—(त्योरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछणे की थाने के दरकार है?

रगलाल—आपसरी में पूछणें को क्यु दोस थोडोई है।

घमडीलाल—थे थारो कवोनो। क्यु काम हो, कै यो।

रगलाल—काम तो यो है— थे बडा आदमी हो सो दया मया राख्या करो। सुण्यो है क ना—

"दया धर्म्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जब लग घटमें प्रान॥"

घमडीलाल—रेणद्यो, म्हे सा आणा हा।

रगलाल—खैर! कोई चोखोसो रुजगार होयतो म्हनै बी बतावो, ज्यूं दो पीसा ठाला बेठ्या मिल ज्याय। कोई नयो काम करोतो करल्यो?

घमडीलाल—(झुंझलाकर) कोई नयो काम नई करणु है। एक जणाके सागेतो वेपार कर्योयो जिको रुपया दश हजार बाकी रगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामें पाणीं पड गयो, जणा हारकर हूब नालस करणी पडी है।

रगलाल—जणा के आट है। वा कह्या करे है—

'नालस करो तकादो कुर्यो, घर घर दिछणा बाटो।
बडा भाग से' रुपया पावो, नई थुका लगाकर चाटो॥"

घमडीलाल—बस, रेण द्यो बतोलावाजी ने। चोटी में लाग्या वेरी पटै। चल्या आया है अठे ठालाभुला छाती छोलणने।

रगलाल—(मनमें) अै का मनमें तो घमडको ठिकाणुई कोनो रिह्यो। मैं तो सीदी बोलु हु, यो मेरी सटी टेडी टेडी ई बोल्या जाय है। देखो, गोपीराम बी आदमी ई हे। गयोडा आदमी से कितणी हलीमो से बतलावे है, कितणु मान तान राखे है, कितणु रुहारो देवे है। अैंको मिजाज तो आकास में ई चढ गयो। आपणें हूब अैंको के गरज है, किरोडपती है तो आपका घरको है। अैंसे दो बात तो जरूर करणीं चाये। अैंको आख आछी तरा खोल दोणी

उठाकर सं'ग कानी देखुई कोनी। दलिदरियाने देख
तो मने सरमई भीत आवे, मेरे कन्ने कगाल को के का
पण मैं जी जबरोट्ट'। मेरे कन्ने ये लोग आवें जणा
इसो खुनस काडण लाग ज्याऊ, जिको अ'ण को खायो
सो बल ज्यावे। आगीने आपणे कन्ने आवणई जुगता को
रवें।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमंडीलाल—क्यु। कैंया आया हो? थारी दुक
पर आज काम कोनी के?

रगलाल—(मुलककर) थारा दरशण करणने आगया

घमडीलाल—(लापरवाईसे) दरशण करणा हों
मन्दर में जावो।

रगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल है

घमडीलाल—(त्योरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछ
को थाने के दरकार है?

रगलाल—आपसरी में पूछणे को क्यु दोस थोडोई है।

घमडीलाल—थे थारी कवीनां। क्यु काम हो, कै थो

रंगलाल—काम तो यो है— थे बडा आदमी हो सो द
मया राख्या करो। सुणी है क ना—

"दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जब लग घटमें प्राण॥"

घमडीलाल—रेणद्यो, म्हे सा आणा हा।

रंगलाल—खैर! कोई चोखोसो रूजगार होयतो म्हानै बी बतावो, ज्यूं दो पीसा ठाला बेठ्या मिल ज्याय। कोई नयो काम करोतो करल्यो?

घमडोलाल—(झुंभलाकर) कोई नयो काम नई करणु है। एक जणाके सागेतो बैपार कर्योथो जिको रूपया दश हजार बाकी रेगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामें पाणी पड गयो, जणा हारकर दूंब नालस करणी पडी है।

रंगलाल—जणा के भाट है। वा कह्या करे है—

'नालस करी तकादो कुर्यो, घर पर दिछणा बाटो।
बडा भाग से रूपया पावो, नई थुक लगाकर चाटो॥"

घमडोलाल—बस, रेण द्यो बतोलावाजी ने। चोटी में लाग्या वेरी पटै। चल्या आया है अठे ठालाभूला कातो छोलणनै।

रंगलाल—(मनमें) अँका मनमें तो घमडकी ठिकाणुई कोनी रियो। मैं तो सीदो बोलु हु, यो मेरी सटो टेडो टेडो ई बोल्या जाय है। देखो, गोपीराम बी आदमी ई है। गयोडा आदमी से कितणी हलीमा से बतलावे है, कितणु मान तान राखे है, कितणु स्यारो देवे है। अँ को मिजाज तो आकास में इ चढ गयो। आपणें इब अँको के गरज है, किरोडपती है तो आपका घरको है। अँसे दो बात तो जरूर करणीं चाये। अँको आख आछी तरा खोल दे

उठाकर झ ण कानी देखुई कोनी। दलिदरियाने देखकर तो मनै सरमई भोत आवे, मेरे कन्ने कगाल को के काम। पण मैं बो जबरोडु'। मेरे कन्ने ये लोग आवें जणा इसी इसी खुनस काडण लाग ज्याऊ, जिको अ ण को खायो पियो सो बल ज्यावे। आगीने आपणे कनै आवणई जुगता कोनी रवें।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्यु। कैंया आया हो? थारी दुकान पर आज काम कोनी के?

रगलाल—(मुलककर) थारा दरशण करणने आगया।

घमडीलाल—(लापरवाईसे) दरशण करणा हों मन्दर में जावो।

रगलाल—(बात टालकर) आजकाल के ॰।

घमडीलाल—(त्योरी चढाकर) म्हारा को थाने के दरकार है?

रगलाल—आपसरी में पूछणे को क्यु रोस

घमडीलाल—थे थारी कवोनां। क्यु काम

रगलाल—काम तो यो है— थे वडा मया राख्या करो। सुणो है क ना—

"दया धर्म को मूल है, पाप

तुलसी दया न छोडि

घमडीलाल—रेणदो

रगलाल—खैर। कोई चोखोसो रूजगार होयतो म्हानै बी बतावो, ज्यू दो पीसा ठाला बेठ्या मिल ज्याय। कोई नयो काम करोतो कारयो ?

घमडीलाल—(झुंझलाकर) कोई नयो काम नई कारण है। एक जणाकै सागेतो वेपार कर्योयो जिको रुपया दश हजार बाकी रेगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामें पाणी पड गयो, जणा हारकर इब नालस करणी पडी है।

रगलाल—जणा के आट है। वा कह्या करे है—

'नालस करो तकादो छुट्यो, घर घर दिछणा बाटो।
बडा भाग से रुपया पावो, नई थुक लगाकर चाटो॥"

घमडीलाल—बस, रेण द्यो बतोलावाजी ने। चोटी में लाग्या वेरी पटे। चल्या आया है अठे ठालाभूला छाती छोलणने।

रगलाल—(मनमें) ग्रैंका मनमें तो घमडको ठिकाणुई कोनो रिह्यो। मैं तो सीदो बोलु हु, यो मेरो सटो टेडो टेडो ई बोल्या जाय है। देखो, गोवीराम बी आदमी ई है। गयोडा आदमी से कितणी हलीमा से बतलावे है, कितणु मान तान राखे है, कितणु इशारो देवे है। ग्रैंको मिजाज तो आकास में इ चढ गयो। आपणे इब ग्रैंको के गरज है, किरोडपती है तो आपका घरको है। ग्रैंसे दो बात तो जरूर करणी चाये। ग्रैंको आख आछी तरा खोल दीणी

उठाकर कंग कोनी देखई कोनी। दलिदरियाने देखकर तो मन्ने सरमई भोत आवे, मेरे कन्ने कगाल को के काम। पण मैं बी जबरोछु'। मेरे कन्ने ये लोग आवे जणा इसी इसी खुनस काडण लाग ज्याउ, जिको अंग को खायो पियो सो बल ज्यावे। आगीने आपणे कन्ने आवणई जुगता कोनी रवें।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्युं। कैंया आया हो? थारी दुकान पर आज काम कोनी के?

रगलाल—(मुलकाकर) थारा दरशण करणने आगया।

घमडीलाल—(लापरवाईसे) दरशण करणा हों, तो मन्दर में जावो।

रगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल हैं?

घमडीलाल—(त्योरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछणे की थाने के दरकार है?

रगलाल —आपसरी में पूछणें की कयु दोस थोडोई है।

घमडीलाल—थे थारी कवोना। कयु काम हो, के हो।

रगलाल—काम तो यो है— थे बडा आदमी हो सो दया मया राख्या करो। सुणी है क ना—

"दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जब लग घटमें प्राण॥"

ओ, म्हे सा आणा हां।

चाये (ऊपरसे) सेठजी ! कैया नाक चढाकर बात करो हो ?

घमडीलाल—श्रे मे के बात है। नाक तो म्हारोई है। चढावागा, चाये ऊतारांगा।

रंगलाल—थारे बडा श्रादमिया लायक ये बाता नई है। कहोवी तो है—

'वडा बडाई ना तजे, बडा न बोले बोल।
होरा मुखसे ना कहै, लाख हमारा मोल॥"

घमडोलाल—इब देखा म्हाने कुण छोटो श्रादमी बणावे है।

रगलाल—छोटा बडा तो करमा से होय है। पण थोडासा जीवणाके ताई इतणु गूमान करणु चोखो कोनी।

घमडीलाल—म्हे गूमान कैंके सामने करा? म्हारो कोई बराबरियो होय जणानां। थे कैं बाडोका बथुवा हो?

रगलाल—थाने श्रें बातको गुमान होयगो। म्हेतो थणियांणो जायोडाने सबने एक समजा हा, पण यो वेरो कोनी पड्यो—थे बडा श्रादमी क्या पर इतणा इतरा रिया हो? जाणा हा श्राजताई या लिछमी कोईके सागे नई गई है। पण था लोगाका सागे जरूर जायगी।

घमडीलाल—जणा दुनिया में बडा श्रादमी युई वणाया गया है?

रगलाल—क्यु। बडा श्रादमियाके सींग पूछ होय है के? छोटा बडा में के फरक है? इतणुई फरक है ना—बडा श्रादमीका टाग में ज्यादा श्रादमी चल्या जावे है, छोटा

आदमीका दाग में कमती चल्या ज्यावे है। बस, और तो कयु फरक है ई कोनी।

घमडीलाल—(खिजकर) रैवाद्यो, बस म्हारे आगे कयु ज्यादा परमोद लगावो हो। सा जाणा हा।

रंगलाल—के चुलाकी राख जाणो हो। जाणता तो इसा-यी बातई के घो। थे तो थारा मनमें कोरा रामजी हो रिह्या हो।

घमडीलाल—(जोरसे) अच्छ्यातो, थारे कमे कयु मागण जावा तो मत दियो।

रंगलाल—अँ बातको के गूमान करो हो। अंयाई करोगा तो मागण जोगाबी हो ज्यावोगा। मागणको दिन बो भगवान जलदोई दिखा देवेगो। ससार में गरब गूमान कोईको नई रिह्यो है। आच्छ्या २ को गरब गल गयो है। जरा कान खोलकर सुणो—

जग में गरब किया सोई हार्या।
गरब कियो रतनागर सागर, जल खारा कर डार्या।
गरब कियो लकापति रावण, टुक टूक कर डार्या॥
गरब कियो उणचकवे चकवो, रेण बिछोवा कर डार्या।
गरब कियो वा बनको चिरमो, मूडा कारा कर डार्या॥

घमडीलाल—देख्याजी। मरगया गरब गालबा वाला। म्हाने मागणको दिन भगवान दिखा देवेगो, अँ बातको खबर थारे कर्म आगई होगो। आया हैं बात बणायणने। कहता

सरम कोनी आई—"मगती ओर भीख्यो खाई कोनी।"

रंगलाल—देखो। गेलने तो थारे सें क्यू मदत मिलो कोनी। आगेने मिलणे की म्हानें आसा कोनी। क्यूं धोती मा से निकल २ पडो हो। मन्ने थारो परवा के है?

घमंडोलाल—परवा नई है तो म्हारे कन्ने के भख मारण ने आया हो। देख्यो डोल—"गलियारा में टट्टी बैठे, उलटो घूरिया काडे।"

रंगलाल—बस। थारा बी बडा आदमियाका डोल देख लिया। करदियो मु तूतई सो।

घमडोलाल— आच्छ्यो के आट है, डोल देख लियो तो, आगेने म्हारी गद्दीमे आवोगा तो धुल खावोगा।

रंगलाल—थारे कन्ने कुण आवे है। थे के चीज हो, क्याके लागो हो? गद्दी को घमंड दिखावो हो। ठेर ज्यावो, गद्दी में तो धुलई खाणने मिलसी।

घमडोलाल—आच्छ्यो। दब भोत होगई, चुपचाप चल्या जावो। अण बातामे के खावो हो?

रंगलाल—(उठकर) या ल्यो। म्हे तो चाल्या। पण ऐं बातको परचो थाने एक महीना के भोतर नई दिखा देवा तो असल बणियाणीं के कोनी जाया (मनमे) ऐं वखत गोपीराम की भीत सावल पड रही है। बीस तीस लाख तो होई गया है। अ याई सावल पडतो रवेगो तो दस बीस दिनमे वी बी किरोडपती हो ज्यायगो। पीछे ऐं

पूतने चोखी तरा समज लेवागा जतो मा काडकर सीदो लग कर देवागा। (ऊपरसे) कोरी गद्दीका घमड मे वाको हो रिह्यो है। रूके दिखा देवागा या गद्दी फट्टी उडती फिरसी।

घमडीलाल—(आख लाल करकर) वस, चल दे। के सेखी लगावे है।

रगलाल—(चाल पडे है श्रोर मनमें सोचे है) पेलाई जाणे था यो आदमी महा खराब है। अंको आखमें सील नई है। मायाका मदमें चुर हो रिह्यो है। सो कदे ना कदे लडाई जरूर होगी, वाको वा हुई। श्रादमीने इसी जगा नइ जाणु चाये जठे श्राव बेठ श्रोर प्रेम श्रागलो नई करें। महाराज तुलसीदासजी बी तो कह्यो है—

"श्रायाको श्रादर नही, नही नैनमें नेह।
तुलसी वहा न जाईये, कचन वरसो मेह॥"

श्रादमीने श्राव बेठ श्रोर प्रेमवाली जघाई जाणु चाये। जैया कह्यो है—

"श्रायाको श्रादर करे, चलत नियावे सोम।
तुलसी वा घर जाईये, मिलिये विस्वा बीस॥"

(सोचतो २ रगलाल चल्यो जावे है)

⊛ प्रवेश दूसरो ⊛

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधर को मकान।

(गोपीराम मोजीराम बैठक में बैठ्या है)

गोपीराम—बोलो। मोजीरामजी महाराज ?

मोजीराम—बस, आनन्द होगया। आपा चावे था जिकोई बात होगई। देखल्यो, ऊ ई सेवाराम का बेटा आकर थारी नोकरी करण लाग गया है। पीसाको परताप इसोई है। मेरा मटा मुडासें कोनी बोल्या करता, जिको इब आप्णेंई बाबुजी २ कवे हैं।

गोपीराम—कोई बात ना। वा कह्या करें है—"करेगो सो पावेगो, बावेगो सो लुणेगो।" आपण के लियो।

मोजीराम—लोणपर बात थोडोई है। दुनियाका धाराको बात कही है।

गोपीराम—ससार समुद्र है। ईमें के नें बेरो कैया २ का जीव भया पड्या हैं। कपाली २ बुद्धी है। बोलो। थारा के हाल चाल है ?

मोजीराम—म्हारा हाल के पूछो हो ? रोजीना दुदिया भाग छणे है। दुसमनकी छाती पर मेरो रगडो लागी है।

गोपीराम—देखियो। यो रगडो लगावता लगावता, कदे

सरी रगडो मत लगावण लाग ज्यायो। यो कलकत्तो है, अठेकी हवा भोत जलदी लाग्या करै है।

मोजीराम—म्हारै तो हवा जलम तांई श्री भग भवानी की लागी हो, जिको श्री के स्यामने दूसरी हवा असर कोनी करै। पण अठे बडा बायु कुहाण लाग ज्यावें जिका श्री भैरवो चक्करमें भोत जलदो फस ज्याया करें है। सोना-गाछीको हवा खाया बिना ऊ णके पितरा पाणी कोन्या लेया करें है। सो थे कठ लगोटी मत भडका आयो।

गोपीराम—म्हांने के समजो हा। म्हे लगोटी का साचा हा

(इतणामें नैणसुख मगतूराम आवे हैं)

नैणसुख, मंगतूराम—(गोपीरामने) जयगोपालजीकी! बाबुसाब।

गोपीराम— जयगोपाल।

मोजीराम—बोलो, नैणसुखजी! आजकाल के करो हो?

नैणसुख—दलाली करा हा।

मोजीराम—आसामी खुब पटे है ना?

नैणसुख—म्हे तो दलाल भाई हा, म्हारे तो थे बी आसामीई हो। देख ल्यो, थे कितणा क पटो हो।

मोजीराम—(मुलककर) थोडो २ माल हाथमें राख्या करो। घणोंई आसामी पट ज्यायगो। आजकालका बाबु लोगाने पटाणे को यो भोत सीदो रस्तो है।

मगतूराम—म्हाराज। यो काम थारे ताईं छोड राख्यो है, क्यूं को अै का रास्ता थानै चोखा मालुम है। थे आज काल ठाला बी हो, सो या ढलालो थे कर्या करो। थारे पेटा खूब हो ज्यायगो।

मोजीराम—हा। हा॥ समज गया। थारे से यो काम कोनो होणै मनै। क्यूंको यो काम राडिया ढाडिया का नईं है। ये काम तो लुगाईवालाका है। ओर कठे मिसल नईं बेठे तो घरमें त्यार मिले, सो यो काम तो नैणसुखजोईं लायक है। थे तो आपको गेल २ बाबुपटाणै में रिझ्या करो।

मगतूराम—थे या, मनमें क्यूं राखो। थे बी देशसें मिश्राणोजीने बुला ल्यो। पीछे बरणी पाठ को धर्मार्थ लम्बर लाग ज्यायगो मत्तेईं चोज घरा पुचबो करेंगी।

मोजीराम—मिश्राणी तो या लोगाके लेखे तुलसी पीपल को पेड है।

मगतूराम—जणाके आट है। सोचणै को आराम हो ज्यायगो।

मोजीराम—वाहजी, ढपोलसखजी। आछी बिन्दी चाक के मान लागी। म करे, लगुरी माकडको सो आप लिया बुडा बान्दरा की सी।

(इतणामें रंगलाल आवे है),

गोपीराम—(सगलाने) बस, चुप रवो। रंगलालजी आवे है (सब जणा चुप हो ज्यावे है।

रंगलाल—आज के ही रिह्यो है?

गोपीराम—(मुलककर) आवो। कयुं ही रिह्यो ना, बैठ्या हा।

रंगलाल—अैं दस पाच दिनमें कयुं और बी सावल्ल पड़ी के?

गोपीराम—हा। रुपया पचास चालीस लाख मिल गया हैं।

रंगलाल—वस तो, म्हे वी याई चावे था। इब तो ऊ ने घणु ई समज लेवागा।

गोपीराम—या के बात है? या क्यां पर कही?

रंगलाल—या बी एक बात है। अठे आपा सगला जणा घरी घरका बैठ्या हा ना?

गोपीराम—हा! सगला घरकाई घरका है। बारको कोई कोनी।

रंगलाल—अैं मेरा मटा घमंडीलाल गिरधारीलाल वाला के भोत दिमाग होगयो। आज खुशीई सुद भाव ऊ की गद्दी में चल्या गया था, सो मारे मिजज के टेढो होगयो, ऊट-पटांग बकण लाग गयो। सेसमें ऊ की म्हारी पूरी सारी तकरार होगई।

मोजीराम—ऊ की नामई घमंडीलाल है, जणा आपका नामकी लाज तो राखोई चावे। नामको असर हुया बिना कैंया रवे।

गोपीराम—या ऊको भूल है। ईश्वर को नीचे वसकर घमड नई करणु चाये। आपसरीमें भेद भाव नई राखणु चाये। सब एकई माया है।

रंगलाल—वो तो, या बात ओर कवे है, मैं वाँके स्यामने गूमान करू। मन्ने मेरी बराबर को कोई दोखेई कोनो।

गोपीराम—दुनिया में एक से एक बढकर पड्या है। धरती पर इब वो हिसा २ मिनख पड्या है, जण के आई गई को छेई कोनो है।

रंगलाल—ऊ ण तो आपके मनमें सगली दुनियाने नबीजी समज राखी है।

गोपीराम—ऊंके समर्ज्या के होय। पण या बतावो आपणु के मुतबल्ल है ?

रंगलाल—एकबर ऊने कोई ना कोई सुरत सें जरूर नीचो दिखावणु चाये, कोई वो काम में ऊने ऊथलकार मंदो पकटणु चाये।

गोपीराम—जणा एक काम करो (नैणसुख, मगतूराम ने) बोलो, क्य काम है के ?

नैणसुख, मंगतूराम—(आपसरीमें धीरासो) इब ये आगला आपको ओले की बात करेंगा, सो बैठ्या रहणु ठोक नई (ऊपरसें) काम तो क्य ई ना जो। वो कलकत्तो तो लिखा ज्यो है। इब और लेवोगा के ?

गोपीराम—ना। और कोनी लोगु।

नैणसुख, मगतूराम—ठीक है (दोनु जावें है)

रंगलाल—हां। कुणसो काम करा?

गोपीराम—कणा क अैं बखत रुई भोत माथि है मन्दा २ भावको वेच्योडी हे। अैं बखत ऊंमें पूरो घाटो है सो आपणै रुईको खेलो कर गेरो। जितणी रुई है सो सगली खरीद ल्यो। पीछे देखियो लोग ऊंसे मु माग्या दाम लेवेंगा जणा आपेई जीव निकाल देवेगो।

रंगलाल—भोत ठीक। या जुगती तो भोतई साचैं बताई। अैं में ऊंको काच आपई निकल पडेगो।

गोपीराम—थारा, म्हारा, भोलारामजी का, तीनवाका नाम सें खरीद कर ल्यो, और बी बणे जठे ताई लोगांनै सामिल कर ल्यो।

रंगलाल—ठीक है, अैंयाई करागा। देखियो इब के के रंग खिलै।

(इतणामें भोलाराम आवे है)

गोपीराम—वे ल्यो। भोलारामजी बी आगया है। अ याने बी केद्यो।

भोलाराम—बोलो। के हुकम है?

रंगलाल—आजकाल घमंडीलाल को दिमाग भोत सुज गयो है। सो ऊंकी सोई ऊतारणीं चावे। जैंको उपाय या सोची गई है कि, अैं बखत ऊंकै रुई भोत माथि है।

गोपीराम—या जको भूल है। ईश्वर की नीचे बसकर समाज मंड़ै कारण चाये। आपसरीमें भेद भाव नई राखण चाये। सब एकाई माया है।

रंगलाल—थी तो, या बात ओर कवे है, मैं कैके ब्याहमें गुलाम कहूं। मने मेरी बराबर को कोई दोखेई कोनी।

गोपीराम—दुनियां में एक से एक बढकर पड्या है। धरती पर एक सो सिरा २ सिरख पड्या है, जण को आई गई की छेई कोनी है।

रंगलाल—ऊं'ण तो आपके मनमें सगली दुनियांनै नवीजी समज राखो है।

गोपीराम—ऊंको समज्यां के होय। पण या बतावै आपणु' को मुतलब है?

रंगलाल—एआबर ऊनें कोई ना कोई सुरत सें जक नीचो दिखावणु चाये, कोई भी काम में ऊंनें ऊथलकर मूर्द पकाटणु चाये।

गोपीराम—आणां एक काम करो (नैणसुख, मगतूराम नें) बोलो, के काम है कं?

नैणसुख, मगतूराम—(आपसरेमें धीरासो) इब ये आगल आपको चोने की बात करेंगा, सो बैठ्या रहणु' ठीक नं

(— तो थव ई नां जो। यो कलकत्तो तो निप मोर मेवोंगा के?

* प्रवेश तीसरो *

ठिकाणो घमडीलाल गिरधारीलालकी दुकान।

(घमडीलाल बैठ्यो है)

घमडीलाल—(मनमें) गरब गुमान बी तो दुनियामें कोई बात कै ताई बणायो गयो है। गरब गूमान सेई बडा आदमी की बडप्पण सो मालुम देवे है। लोग मेरी बढी हुई आबरूने देखकर तथा मेरो ठाठ बाट, रोब दोब देखकर, माहे मांय जल्या जावे है। सो भलांई अँसें वो वैसी जलो। कह्या करें है—"कुतिया पुछ क्युं हिलाती है, इसकी आत जलती है।" सुणा हां लेर सें लोग मेरी खोटी खरी बी मोत करे है, सो कोई बात ना, हाथियाकी लेर कुत्ता यु ई वूसबो करें है। सु पर कह्या तो छट्टो को दूद निकलवाल्युं। (ऊपरसे) मुनीमजी! देख्यो क।

मोतीलाल—फरमावो। के ?

घमडीलाल—देख्यो कोन्या। रंगलो कितणो २ घडकार करे थो। छोटासा मुंह बडी सी बात। इब वो म्हारी

सो रूई सगली आपणा तीनु फारमा के नाम से ले लेणी और जंने चाये जणा कनें मूमाग्या दाम लीया चाये। सो आपई ढीलो हो ज्यायगो।

भोलाराम—ठीक है। इसा में तो इसीई होणी चाये। मन्ने तो आपलोगा का काम में कोई उजर है नई।

गोपीराम—वसतो, जावो। इब देरी को काम नई है। चुपचाप जाकर जितणु इष्टाक रूईको होय खरीद ल्यो। कोई बी आदमीनें वेरो नई पटण पावे।

रंगलाल, भोलाराम—भोत ठीक है। जावा हा, अँयाई कारागा। इब म्हारे के ढोल है (दोनों जावे है)

गोपीराम—(मोजीरामनें) बोलो। आज थानें भूख कोनी लागी के ?

मोजीराम—भूखको वारण्ट आया तो एक घन्टा पूरो होगई पण क्या के बटका भरण लाग ज्यावां ? भीतर की काडाई गरम होकर, स्टीम एक दम तेज हो रियो है। सो घरा चालो तो अंने ठडों करा।

गोपीराम—(मुलकाकर) चालो। आत्मा परमात्मा है। अंने बी कष्ट दीणु ठीक नई

(दोनु जावे है)

बात श्रैं से जरूर करणी चाये। श्रैंने मसकरिया में खुब रुडावणु चाये। (भुगताण लेकर) सेठजी। पूजडो की के बात कद्दी ? सुणी कोनी के ? गावमें रवो हो क ऊजाड में ? आजकाल म्हारे सेठा कन्ने इतणो रकम होगई है कि, थाने मोल लेकर छोड दी।

घमडीलाल—जाणा हा। काल ताई तो वो गुटिया मजुरी करतो, आज म्हाने मोल लोगवालो होगयो।

मोजीराम—सेठा की सकल तो देखो, जाण्य गोबर पर पाणी बरस-गयो होय। थारे बडकां के और थारे तो लिछमी जी सागे जलम्याई होगी।

घमडीलाल—म्हारी वयु बात करो हो। म्हाराज। सुलफा गाजाको दम लगाई है। बगीचियांकी हवा खाई है। थाने के येरो घालको के भाव है।

मोजीराम—ओहो ! सगलो बात जाणने को ठेको थारेई नाम होगयो दीखे है।

मोतीलाल—(मोजीरामने) म्हाराज। वयु बक बाद लगावो हो। थारे गेले वयु जावो नां ?

मोजीराम—गेले तो जावांइगा। अठे बेठकर म्हाने के खेतरपाल धोकणुं है।

है। बासण

मथ्रऊत

घमंडीलाल—नंई। आजकाल वो कयु बड बोलो ह
गयो है। ऊ कोसी अक्कल तो में चूंटी में लिया डोलु हु
मोतीलाल—अँ बात ने वो के जाणे। थे पगासें
लगायो, जिको ऊ सें हाथा सें तो खोलीई कोनी जा
वो मुरख है, गवार हैं। गवार होय जिका अँयाई
व्याया करें है। म्हाराज तुलसीदासजी वो तो वाहो है

"तुलसी बुरा न मानिये, जो गवार कह ज्याय।
जैसे घरका नरदहा, भला बुरा बह ज्याय॥"

(इतणामें मोजीराम आवे है)

घमडीलाल—म्हाराज, कैंया आयो है?
मोजीराम—सेठ! भुगताण लीणने आया हा।
घमडीलाल—(नाड हलाकर) आजकाल तो ते
बाणिया कवें वो पूंजडी होगई।
मोजीराम—(मनमें) यो तो आदमी साचाई घम
हैं। वा कह्या करें है—"बोल्योर लाद्यो।' अँको तो बो
मेंई बारा आना है। रंगलालजी साची कवे था म्हा सु
आदमी है, सो मूरख के स्यामने बकबाद करणो ठीक
चुप रैणु ठीक है। कह्या करें है—

"मूरख को मुख बम्बई, निकसत वचन बिहग।
ताको औषध मौन है, विष नहीं व्यापत अग॥"

पण या बात वो ठीक नई। चुप रिह्या आपणु आपो

वात थॅं सें जरूर करणी चाये। थॅंने मसकरिया में खुब रूडावणु चाये। (भुगताण लेकर) सेठजी। पूजडी की के बात कही ? सुणी कोनी के ? गावमें रवो हो क ऊजाड में ? आजकाल म्हारे सेठा कन्ने इतणो रकम होगई है कि, याने मोल लेकर छोड दी।

घमडीलाल—जाणा हा। काल ताई तो वो गुटिया मजुरी करतो, आज म्हाने मोल लीणवालो होगयो।

मोजीराम—सेठा की सकल तो देखो, जाण्‌ गोबर पर पांणी वरस-गयो होय। थारे बडका के और थारे तो लिछमी जी सागे जलम्याई होगी।

घमडीलाल—म्हारी क्यु बात करो हो। म्हाराज। सुलफा गाजाको दम लगाई है। बगीचियाँकी हवा खाई है। थाने के वेरो आलको के भाव है।

मोजीराम—ओहो! सगलो बात जाणने को ठेको थारेई नाम होगयो दोखे है।

मोतीलाल—(मोजीरामने) म्हाराज। क्यु बक बाद लगावो हो। थारे गैले क्यु जावो ना ?

मोजीराम—गेले तो जावांगा। अठे बेठकर म्हाने के खेतरपाल धोकणु है।

घमडीलाल—(मोतीरामने) अ थानेई के दोस है। बामण मजाक होई है।

मोजीराम—के कारण है। अँया बोले है जाण्यु फुल झडता होय। सेठकी सकल तो देखो।

मोतीलाल—(आंखकाडकर) म्हाराज। थे बस्वड बाजई हो के? जावो चल्या जावो। बस, भोत होगई।

मोजीराम—आप काजी हो क मुल्ला?

मोतीलाल—म्हे कोई हा, थाने के मुतबल?

मोजीराम—(ऊठकर) क्यो। म्हाने के थारे से मतारथ कारण है। या ल्यो म्हे तो चाल्या (दोहो बोले है)

"ठग मिल्या गुमस्ता, मूरख मिलगा सेठ।
सेठाणी ऐसी मिली, छाती ढके न पेट॥"

मोतीलाल—साची बात है—"काल बागड से ऊपजे, बुरी बामण सें होय।"

मोजीराम—बामण से साचो काम कोनी यद्यो है। नई तो भला बुरा को चोखो तरा बेरो पट ज्यातो (कुडती सें चल्यो जावे है)

घमडीलाल—देख्याकं। "भैंस आपका रगने तो कोनी देखे, दूसरा ने देखकार बिदकण लाग ज्यावे।" बामणडो आपकी सकलने तो कोनी देखे, दूसराकी हासी ऊडावे है।

मोतीलाल—बामण आगयो, नई तो अ ने मसकरियाकी चोखी तरा बेरो पटा देता। पण वा कह्या करें है—"गायां, भायां बामणा भाजन्साई भला।" बामणा सें तो नाको देणई है।

घमडीलाल—(नाक चढाकर) आज तो चित्त भीत खराब होगयो। थापणी मोटर नीचे खडोई है, चालो मेदानकी हवा खायावा।

मोतीलाल—आपकी मरजी। चालो भलाइ।

(दोनों जावे है)

---

* प्रवेश चोथो *

ठिकाणो गोपीराम सुरलीधरकी दुकान।

(मोजीराम आवे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) आज कठे जा आया ? कैंया लसापता फिर किरा हो रिह्या है ?

मोजीराम—घमडीलाल गिरधारीलाल के भुगताण ल्यावण गयो थो।

गोपीराम—आज थे भुगताण ल्यावण कैंया गया था ?

मोजीराम—रुपया पचास हजारको हुंडी थी, जणा रामप्रसादजी मनै भेज दियो।

गोपीराम—जणा तो आप आज बडे ठिकाणे जा आया!

मोजीराम—बस, बडा ठिकाणाकी बात मतना पूछो। पक्को मूसलचन्द है। बडो बजूजात है।

गोपीराम—क्यूं। थारैसैं यो सुठ भेड होगई के?

मोजीराम—के बतावां। जातांई मेरी मटो उट पटांग बात करणा लाग गयो। एकबर तो मनमें आई अँका मूंडा पर थप्पड लगादुं। पण पीछे मैं ई हांसियामें टालकर चल्यो आयो।

गोपीराम—के थाट है। सीनोलोइ तातालोइने काव्या करै है। अँको बदनो तो ऊसे घणुंई लेलियो जायगो। थें बात कानोसैं तो निस फिकर रवो।

(इतणामें भोलाराम रंगलाल आवै है)

गोपीराम—(रंगलालने) आज तो मोजीरामजी थारो उथ बडा बाबुवासे भिड़ाया है।

रंगलाल—वसके। आज ये ऊठै कैया गया था?

मोजीराम—मैं तो सुगताण ल्यावण गयो थो जिको वो जतको घस्यो खोटी खरी मतेई बोलण लागगयो। मारे गूमानके टेडोई होगयो।

रंगलाल—जिको तो वो आजकाल बटोके घोडे सवार हो रियो है। आया गयासे भडवेटी लेवो करै है। नारकी-खाल पेर राखी है।

भोलाराम—अँ घमडीडाके जदसे फारमको काम हाथमें आयो है, जदसे बदनामी सिवाय अँ'ग नेक नामी कदेई कोनी लई। पेला अँको भाई दयाराम मालिक थो जिको, एक लम्बरको दयालु मनोगांगस थो। गयोडाकी मोत भारी

खातरी करवा करती। वो मथ्या पीछे या लीला हुई है। इब ती वा हुई—

"हंसा रहे सो उडगये, काग भये परधान।
जावो विप्र घर आपने, हम किसके जजमान॥"

मोजीराम—साची बात है। आज काल उठे दयाधर्म को देश निकालो हो रियो है। आदर मानने तिलाजली दे राखी है। उठे तो वा होरही है—

"आतीको नाम सहजा, जातीको नाम गुलसफा।"

गोपीराम—(भोलाराम रगलालने) बोलो। ये लोग के कयाया? वो काम बणा आया ना?

रगलाल—काम बणानेमें थोडोई कसर राखे था। इसो काम जडाऊ कयाया हा कि, पूत काइ दिना ताई याद राखसी।

भोलाराम—इसी गाठ लगा दई है जिको ऊ का बाप को ई खोल्योडी कोनी खुलै।

गोपीराम—चोखो काम कयो। रुपया पीसा चाये जितणा और लेल्यायो। रोकडियाने के दियो ४ मागीगा जितणा दे देवेगो।

रगलाल—सो के आट है। काम चलरियो है। चाये या जिका लेबो गया हा। और चायेगा तो और लेल्यावांगा। देखियो एक आट दिनमें थी थारे पगाई आपडसी।

गोपीराम—आपणे पगा पडनेको के काम ॰। पगा पडनू

होय तो मोजीरामजी महाराज मोजुद है।

मोजीराम—इसा दुष्ट आदमीने मेरा धर्म छुवाकर किसा धर्म अपवित्र कारणा है।

रंगलाल—(मुलककर) वो किसो भगो है ? वाणियु ना है।

मोजीराम—जिको आदमी आपका मनमें आपने बडो समजे, दूसराने छोटो समजे, जिको भगोसे वो वेसो होय है।

भोलाराम—साची बात है। औमें के सक है।

रंगलाल—(गोपीरामने) इब तो म्हे लोग जावा हा। कुबदकी जड तो रोपई दई है। इब पेड होय, फल लागै जिका देखलियो। पण देखियो, फल तोडो जणा म्हाने बी नौगा जरूर करा दियो।

गोपीराम—जरूर! जरूर!!

भोलाराम—(उठकर) अच्छ्या तो, जयगोपाल।

(रंगलाल भोलाराम जावे है)

मोजीराम—मे वो मकान जाऊ हु।

गोपीराम—क्यु! के जलदी है ?

मोजीराम—सुरलीने अजबघर, अलीपुर को बगीचो दिखावार ल्यावणु है।

गोपीराम—चालो, जीमणे को बखत् होगयो। मैबी चालस्यु।

मोजीराम—भोत ठीक है, चालो! गाडी त्यार खडी है।

(दोनू जावे है)

० प्रवेश पांचवो ०

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरको मकान।

(गोपीराम लिछमी बैठ्या है)

गोपीराम—देखले! बिपता का दिन बी नीसर गया है। धीरज राख्यां सी सबु होय है। या कह्या करें हैं—

"धीरे धीरे धीरिया, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे केवडा, रितू आया फल होय॥"

लिछमी—रामाय्या कदे चोखा दिन बी आवता क कोनी आवता। मैं तो घणोंई तकलीफ भोगी है। थारें आया पीछे घणाई दोरा दिन काढ्या है। थारें आस्तां थोडा भोत-कोई बोलता बतलावता, आता जाता, जिका बी आवण से, बतलावणसें, रे गया था।

गोपीराम—बावली। आदमी पर थोडी भोत बिपत बी जरूर पडणी चाये। बिपतासेई बेरो पड्या करे है कि, कुंण आपणु है और कुण परायो है। या कह्या करें हैं—

"बिपत बराबर सुख नहीं, जो थोडे दिन होय।
भाई बन्द और मित्रवर, परखि पडे सब कोय॥"

लिछमी—या तो ठीक है। पण बिपता तो सगली तरिया न्याऊई है। बिपताका दिन बरस बराबर होज्याया करे है। थारें आया पीछे दिन भोत दोरा काढ्या है। मेगे

जीवई जाणे है। ऊं बखत के जाया के होगयो रामाको मन लाग्योई कोनी। रात दिन पडो २ स्यास मारबो करतो।

गोपीराम—या तो साची बात है। मोट्यार बिना लुगाई को कैंया मन लागै। पण यो पापी पेट राखे जैंया आदमो ने रेणु पडे।

लिछमी—थे देशमें इतणा २ परमोद लागवे था कि, देशमें रुजगार हो ज्याय तो, देशका आदमियाको तकलीफ मिट ज्याय। सो खालो कैयाँ कोई बात थी के? दूसरांनेई सोख सिखावे था के? थे बो वाई करे था के—"आप गरुजी कातरा मारें, लोगाने परमोद सिखावें।"

गोपीराम—के समजे है। म्हे वे आदमी नई हा, जो काह्या करे हैं—"पर उपदेश कुशल बहु तेरे।" म्हे इबी सें देशमें इसा २ काम चलु कर दिया है जिका ठोक साथ चल ज्यावेंगा तो, देशका आदमी देशमेंई बैठ्या मौज करबो करो।

लिछमी—चोखी बात है। जिको लुगायाका धणी परदेशमें रवे है, उणका पतो देशमेंई रैण लाग ज्यावगा तो वे बिचारी घणीई आसीस देवेंगो।

गोपीराम—थेँ म के सक है। म्हारी समज में लुगायाने दिसावर बुलावणु बो मच्छा भूल है, क्यु कि, लुगाया परदेशमें आवताई निकम्मी हो ज्यावे है। काम काज उणा सें

लोवई जाणे है। ऊ बखत के जाणा के होगयो रामायो मन लाग्योई कोनी। रात दिन पडो २ सास मारबो करतो।

गोपीराम—या तो साची बात है। मोत्यार बिना लुगाई को कैंया मन लागे। पण यो पापी पेट राखे जैंया आदमो ने रेणु पडे।

लिछमी—थे देशमें इतणा २ परमोद लागवे था कि, देशमें रुजगार हो ज्याय तो, देशका आदमियाको तकलीफ मिट ज्याय। सो खाली कैणे कोई बात थी के ? दूसरोंनेई सीख सिखावे था के ? थे बो वाई करे था के—"आप गरुजी कातरा मारें, लोगाने परमोद सिखावे।"

गोपीराम—के रुमजी है। म्हे वे आदमी नई था, जो कह्या करें है—"पर उपदेश कुशल बहु तेरे।" म्हे इयो सें देशमें इआ २ काम चलु कर दिया है जिका ठीक साथ चल ज्यावेंगा तो, देशका आदमी देशमेंई बैठ्या मौज मारबो करी।

लिछमी—चोखी बात है। जिको लुगायाका धणी परदेशमें रवे है, उणका पती देशमेंई रैण लाग ज्यावेगा तो वे विचारी धणीई आसीस देवेंगो।

गोपीराम—अँ में के सक है। म्हागे समज में लुगायाने दिसावर बुलावणु बो महा मूल है, क्यु कि, लुगाया परदेशमें आवताई निकम्मी हो ज्यावे है। काम काज उणा सें नई

करागेसे मन्दाग्नी में पीडित होकर वे आपको अमूल्य जीवन नाग कर लेवें है। आवे हैं आराम के ताईं, उलटो की लेय हो ज्यावे है। वा हो न्याय है—"चोबे गयो थो छव्वे हूं'णने, होगयो दुव्वे। दो गाठका ओर खो बेठ्यो।" जिको बात होज्यावे है।

(इतणामें मोजीराम मुरली आवे है)

मोजीराम—(मुरली कानी हाथ करकर) आज तो थैंने भोत भोत तमाशा दिखालाया। कालीघाट, अजबघर, अली पुरको बगीचो, दुलीचन्दको बगीचो खूब अछीतरा दिखा-ल्याया हा।

मुरली—(नाड हलाकर) आ—हा—रे। आज तो खुब तमाशा देख्या। भोत मजो आयो (मोजीरामने) वावा! इब तो राधाकिशन बोल। (गाकर)

"दमडीका तेल कढेइयामें, रादाकिशन झूटेयामें।"

मोजीराम—बसके? देखा, आगेने कैं के मागे जायगो?

मुरली—आच्छो २ इब कोनी काऊ।

मोजीराम—(गोपीरामने) आज तो घमडोडाने गाडीमें बेठ्यो देख्यो थो, जिको जुतिया माखी सो मू'डो हो'रिह्यो थो।

गोपीराम—कह्या करे है—"देशवाली टारडो पूर्वीयान।" धन पाकर गर्व करण' सोख्योई है। घणुंई बेरो पटज्यासी। कोने तीन् फारसांको तिगरी लागोई है। सो सगलो घमंड धमड आपई उडज्यासी।

मोजीराम—हां। या बात जरूर है। गरब करे लेको तिकबो जरूर चोडे आज्यावे है। उने या लोक्रमौजो आप्येई छोडकर चलो जावे है। कह्या बी करें है—

"अभिमानीसें माया बोली, मैं तेरासे चाली।
खाट गूदडा सिरपर धरले, हेली करदे खाली॥"

पण इसी करो जिको ऊंको न्याग धनासे ऊडतो फिरे।

गोपीराम—आपातो कोईको बी बुराई नई चावा हा। पण ऊंका किरतब इसाई हैं जणां के होय। और आपणु बुरो कर्योडो बी के होय है। आछो न्याऊ करणियु तो परमात्मा है। वा कह्याकरे हैं—

"कौन किसीको मारता, कौन करे बेहाल।
सब बातोंका करणिया, दीनानाथ दयाल॥"

मोजीराम—सेठजी। यो कलजुग है जिको करजुग है, "एक हाथ करो एक हाथ भोगो।" ततकाल परचो मिले है। हलका और ठाडा कर्योडाको फल तो भोगणुई पडे है।

गोपीराम—अच्छ्या इब तो आपणे बी चालो गंगाजीका और पचमुखी हनुमानजीका दरशण कराावा।

मोजीराम—चालो ऊठीनेई बाबा भूतनाथका दरशण बी कराावागा।

गोपीराम—ठीक है। (दोनू जावे हैं)

---

* प्रवेश छठो *

ठिकाणो घमडीलाल गिरधारीलाल की दुकान।

(घमडीलाल बैठ्यो है)

घमडीलाल—(मनमें) देखो। करमकी बात है। क्यु रंगलाल सें तकरार करता और क्यु ये हाल होता। साचो बात है—गरब गूमान आजताई धरती पर भगवान कोई की राख्यो नई। देख ल्यो, हाथ को हाथ परचो मिल गयो। धन पाकर दूसरा की आत्मा दुखाणी, दूसराने आप सें छोटो समजकर घृणाकी निगासें देखणु, महा मूरखा को काम है। पण धन मिलणे सें मूढ घडी आवे जणां आदमी सो क्यु भूल ज्यावे है। ऊणुं जो माफिक सुजण से रै ज्यावे है (मोतीलालने) बोलो, सुनोमजो। इब के करणी चाये?

मोतीलाल—के बतावां। मोत सुस्काल हो गई। मैं तो थाने पैल्याई कह्यो थो—फाटका कवाडा मत करो। फाटका का तो येई हाल हैं। कह्या करें है—

"करो बेटा फाटका, घरका रिह्या न घाटका।"

घमडीलाल—या तो कोई बात ना। गोपीराम फाटका सें यीया किरोडपती हो गयो?

मोतीलाल—ऊ की बय बात खरी हो। ऊ की मा तो

मोजोराम—हां। या बात जरूर है। गरब करे जेको तिकंबो जरूर चोडे आज्यावे है। जने या लीछमीजी आप ई छोडकर चली जावे है। कह्या बी करे है—

"अभिमानीसे माया बोली, मैं तेरासे चाली।
खाट गूदडा सिरपर धरले, हेली करदे खाली॥"

पण इसी करी जिको ऊंकी न्यांग धजासे ऊडती फिरे।

गोपीराम—आपातो कोईको बी बुराई नई चावां हां। पण ऊंका किरतब इसाई है जणा के होय। ओर आपणु बुरो कर्योडो बी के होय है। आछी न्याऊ करणियु तो परमात्मा है। वा कह्याकरे है—

"कौन किसीको मारता, कौन करे बेहाल।
सब बातोंका करणिया, दीनानाथ दयाल॥"

मोजोराम—सेठजी। यो कलजुग है जिको वारजुग है, "एक हाथ करो एक हाथ भोगो।" ततकाल परचो मिले है। हलवा ओर ठाडा कर्योडाको फल तो भोगणुई पडे है।

गोपीराम—अच्छ्या इब तो आपणे बी चालो गंगाजीका ओर पचमुखी हनुमानजीका दरशण करावा।

मोजोराम—चालो ऊठीनेई बाबा भूतनाथका दरशण बी करावांगा।

गोपीराम—ठीक है। (दोनू जावे है)

कि, इव के रुई मे भोत घाटो है। जगाई सगला जणा नट गया।

मोतीलाल—मालम होगी के वाकी रवे थी। या तो डके की चोट बात हो रही है।

घमडीलाल—(सास लेकर) ईश्वर तेरी माया। इब तो तुइ रिछा करणेवालो है। इब या आबरू राखणी और खोणी तेरेई हाथ है। आगेने तो मैं भोत समज २ कार चालगो। फाटको कदे बी नई करुगो। सबने एक समान एक नजर से देखुगो। गरीब को सदा उपकार करुगो। कदे बी कोई को तिरस्कार नई करुगो।

मोतीलाल—अँया सास माथ्या तो काम चाले कोनी। काम तो चालसो रुपया सें। सो, रुपया को उपाय करो। नई तो या मोतीकी सो आब उतरता बार कोनी लागेगी। पीछे गई बातनें घोडाई कोनी नावडेंगा। हाथ मसलताई रह ज्यावोगा। वेरो है क ना ?

घमडीलाल—मोतीलालजी ! या मोतीकी सो आब राखणी इब थारेई हाथ है। मै तो सेंग बेंग हो रियो हु। मँ बखत मेरेतो कई बात कोनी ऊपजे। थेई ज्याणा हो ... ...ोई उपाय सोचो।

ऊनेई जायो है। ऊ को आप्यामें सील कितणी है। कितणा र परोपकार का काम करे है। रात दिन दूसराकी भलाई में लाग्यो रवे है।

घमंडीलाल—या भलाई कवो। असल बात या है कि, आपणे लोगाको फाटका कवाडा करने को काम नई है। वा कह्या करें हैं—"किसवी किसव करे तो छाजे, नंई मुड चिसली बाजे।" अँ में अस्मानो सुलतानो होता बार कोनो लागे। ये तो घर ल्यागो मर ल्याणो का खेल है।

मोतीलाल—फाटका कवाडा को तो येई बातां हैं। वा कह्या करें है—"अ णो चुकी धार मारो।" जरासो ध्यान ऊक चुक होणेई से अँमें खराबी पैदा हो ज्याय है। पण खेर। अँ वखत सिरपर आफत मंड रही है जैको पैला उपाय होणों चाये।

घमडीलाल—ऊपाय वी होईसो।

मोतीलाल—पीछे के ऊपाय होसो। वा कह्या करें है—"घोडी चाये निकासोनें, बावडतो सो आये।" "फांसी चढ ज्यावो, अपोलमें छुटा ल्यु गा।" थे वी वोई सांग करो हो।

घमडीलाल—एक काम करो। दो च्यार जगासें रुपया पैंचा (उदारा) मगा ल्यो।

मोतीलाल—पैंचा ल्यावणने तो आदमी सगलै भेज दियो सो सब जगासे फिरतो जबाब आगयो।

घमडीलाल—असो कें, सगलाने मालम होगई दीखे है,

कान कटाया करै है" सो मोको इसोई है वे लोग जितणा पेंड भरावेंगा जितणा पेंड भर देवागा।

मोतीलाल—ठीकई है। वा कह्या करै हैं—

"अंड गावमें रेणुं ऊट बिलाई लेगई हाजो २ केणुं।"

चानो अंबखत वै घरपरई मिलेंगा। सो भगवान चावे तो आपणुं काम सिद्ध होज्यायगो।

घमडीलाल—चालो, मैं त्यार हु।

(दोनु जावे है)

❀ प्रवेश सातवों ❀

ठिकाणो गोपीराम सुरलीधरकी वैठक।

(गोपीराम मोजीराम बैठ्या है)

गोपीराम—बोलो, मोजीरामजी म्हाराज! आज कैयां सणमणा सा रिह्या हो?

मोजीराम—के बतावां! आज तो वा हुई—

"भूलगई रागरंग, भूलगई जकडी।
तीन चीज याद रही, तेल लुण लकडी॥"

कर ल्यो। वो दयावान आदमी है। रंगलाल, भोलाराम बी ऊंका कह्या में है सो वो ऊणाने बी समजा लेवेगो। ओर आपणु सगलो रस्तो आपई ठीक कर देवेगो। आपां बाणिया हां। कदे मुंह नीचेने, कदे ऊपर नें ऐंयाई होती रवें है।

घमडीलाल—या बात होणेसें गाव तो थापाने आंगलियां सें बतावण लाग ज्यावेगो।

मोतीलाल—अव्वलमें तो गावनै बेरो कोनी पटे। अगर पटे बी तो के थाट है। आपणुं काम पार ऊतरणुं चाये, कोई ना कोई सुरत स वे लोग राजी होणा चावे। पीछे तो कह्या करें है—"दोयको दिल राजी, तो के करेगो काजी।" आपाने समार की चिरचा स के मतलब है।

घमडीलाल—आपणे चालणें सें मानेगा या नई मानेगा ओ बातको के निसचे?

मोतीलाल—निसचे क्याको है। या तो ऊणकी खुसी की बात है। चल्या चालो देखी जासी पीछे तो या बात है—"हाकीम करे सो न्याव ओर पासो पडे सो डाव।" जो कुछ होणो सो हो ज्यायगो।

घमडीलाल—खेर। थारे जचगई तो चल्या चालो। कह्या करें है—"पढो बेटा फारसी, तले पडसी सो हारसी।" आपां ये बखत सगली बाता ऊंयके नीचे दब रिह्या हां सो आगला की खुशामद कर लेवागा, क्युं कि "दबी चुनी

है सो अन्तमें यो सौदा पगा ही ज्यावेगो तो फेर बी बच ज्यावेगो।

रगलाल—याई बात तो मजेदार होगई। इब नकेल आपणा हाथमें आगई। मनमें आवेगो जठोने घुमावागा।

मोजीराम—घुमाणु फिराणु के है। वैरीसें तो बदलो लीणु ई ठीक है। इसी मारो प्यारु' हाथ पग ऊपरनें करकर चौत्त जापडे। ऐकडो सगलो चोड आन्याय। काच बातोसी आपडे।

भोलाराम—फिकार मनाकारो! इसीई ल्यो, इस ततका दाव आ भिड्या है।

मोजीराम—फिकर क्याको है। फिकर तो घणा खाया को है। म्हे तो आजकाल कुल तीनसो तोलामें आ रिह्या हा।

भोलाराम—बाबाजी। पूणी च्यार सेर तो खावो हो और के पीछे हाथी घोडा खाय था?

मोजीराम—म्हानें वैरो कोनीं आदमी बी हाथी घोडा खाया करें हैं। या बात तो थारोई जबानी मालुम हुई। कोइ जगा काम पडगयो दीखे है? जणाई या मोटी २ देई ---- खायोडोसी होरही है।

—बाबाज, के ऊट पटाग बात करण लाग गया।

।राधेश्याम!! कहो।

गोपीराम—या कैंया। थारे मस्त आदमियाके फिकर को के काम?

मोजीराम—(चिट्ठी दिखाकर) या देखो। देशकी चिट्ठी आई है जिको लिख्यो है—छोरी वडी सारी होगई सो फेरा जरूर करणा पडैंगा। रुपयाको बन्दोबस्त कर लीयो। ब्यामें रुपया एक हजार चायेंगा।

गोपीराम—जणा के आट है (एक हजारका लोट निकालकर) ये ल्यो। छोरीका फेरा करदियो और चाये तो और लेलियो।

मोजीराम—(रुपया लेकर) बस। आनन्द होगया। और चायेंगा तो थे मालिक वैठ्याई हो। मन्ने के फिकर है।

(इतणामें रंगलाल भोलाराम आवें है)

रंगलाल—देख लियो ना। घमडीलालको रो घमड नोसर गयो है। इसो जयलवार माय्यो है जिको पूत उठायोडोई उठसी।

भोलाराम—वोतो उठ लियो। ऊंका अडका सात औतार धारण करकर आज्याय तो उठणु ई नई।

मोजीराम—(मुलकाकर) भरम २ में चोखो काम बणायो। थारे लोगा विना ये काम कुण करतो। साची कही है—

"खेल खिलाराका, घोडा असवाराका।
दुकानदारी भरमकी, हाकमी गरमकी॥"

गोपीराम—एक बात है—काम आपणैं हाथमें आगयो

है सो धन्नमें यो सौदा पगा हो ज्यावैगो तो फेर बी बच ज्यावैगो।

रंगलाल—याई बात तो मजेदार होगई। इब नवेल आपणा हाथमें आगई। मनमें आवैगो जठीने घुमावागा।

मोजीराम—घुमाण फिराण के है। वेरीसें तो बदलो लीण ई ठीक है। इसी मारो ध्याह हाय पग ऊपरने आरकर चोत्त जापडे। ऐकडी सगली चोड आज्याय। काच बातोसी आपडे।

भोलाराम—फिकर मनाकारो। इसीई ल्यो, इब ततका दाव आ भिड्या है।

मोजीराम—फिकर क्याको है। फिकर तो घणा खाया को है। म्हे तो आजकाल कुल तीनसो तोलामें आ रिह्या हा।

भोलाराम—बाबाजी। पूणी च्यार सेर तो खावो हो और के पीछे हाथी घोडा खाय था?

मोजीराम—म्हाने वेरी कोनी आदमी बो हाथी घोडा खाया करें हैं। या बात तो थारोई जवानी मालुम हुई। कोई अगा काम पडगयो दीखे है? जणाई या मोटी २ देई मूसा खायोडोसो होरह्यो है।

रंगलाल—बाबाज, के उट पटांग बात करण लाग गया। राधेश्याम। राधेश्याम!! कहो।

मोजीराम—क्यु ऊ चोरटाके बापको क्यु दीणू आवे है के? सीताराम। सीताराम!! बोलो।

गोपीराम—वाह ! या खुब हुई। वा कह्याकरें है—"कोई गावे होलीका, कोई गावे दिवालीका" ये राधेश्याम राधेश्याम कवे है, थे सीताराम सीताराम बोलो हो।

(इतणामें मुरली आवे है)

मुरली—(नाड़ हलाकर) बाबा, राधाकिशना बोल तेरा क्या लगेगा मोल।

रगलाल—(मोजीरामने) बोलो ! म्हे के करा। टाबराई थारो खिज काड राखी है। जेंको के ऊपाय ?

भोलाराम—ये के करें ! अंग में तो बा हुई "एक पेठो नो लगवाल, गधोने ले गयो कोटवाल।" सगलाई जणा अ णने खिजावे हैं।

गोपीराम—(मोजीरामने) थानें कोई खिजावे जणा थे चुप हो ज्याया करो। क्युंई मत बोल्या करो।

मोजीराम—म्हे किसा चोर हा जिको चुप हो ज्यावा। चुप चाप तो चोरई रिह्या करें है। वेई कोनो बोल्या चावें। कहो बो तो है—

"माली चाहे बरसणा, धोबी चाहे धुप।
साह जो चाहे बोलणा, चोर जो चाहे चुप ॥"

म्हे तो साह हा, चोर को नाम तो लेवाई कोनो, बोल्या बिना कैया रवा।

(इतणामें घमडीलाल मोतीलाल आवें है)

घमंडीलाल—(मोतीलालनें) मोको तो चोखो मिल

गयो। औं बखत मगला जणा मोजुद है। चोकडो की चोकडो भेलो हो रहो है।

मोतीलाल—बस, भगवान चावे तो इब काम बण ज्यासो। थे तो औं बखत जितणी नीचो खीचणं सको खीच ज्यायो क्यु की मोको ईसोई है।

मोजोराम—(मनमें) आज तो मुनीम मालिक दोनु' आवे है। पूताके पोखाल्ना होगया, काच भारो हीण लाग गई, गड़वा सें भेर होगइ (ऊपरमे) "देखो मरदाको हथ फेरो, या मा तेरो क मेरो।'

घमडीलाल—(गोपीराम का पगामें पगडी धरकर) या लाज राखणी थारे हाथ है।

गोपीराम—हैं। हैं।। घमडीलालजी यो के। थे बडेरा हो (पगडी ऊठाकर घमडीलालने दें देवे है)

घमडीलाल—औं बखत दुनियामें थारे सिवाय कोई नई है (रगलालने) मेरे से जो कुछ कसुर हुयो होय माफ करो। मैं करया को फल चोखो तरा पागयो।

मोजोराम—क्यु। बाकी होतो श्रीर कर कर देखल्यो। आपका पगामें पगडो के धरो हो, मेरा पगामें धरो ज्यु' पर लोक में मोच होज्याय।

भोलाराम—बाबाजी! पेला औं लोकको तो मोघ हु गयो। परलोक को वात पोछे करियो।

घमडीलाल—(हाथ जोडकर) मैं तो थारो सब को दास छु। कोई सुरत सें मेरो उद्धार करो।

गोपीराम—(रंगलालनें) बोलो। इब के करणीं चाये?

रंगलाल—देख ल्यो। आप मालिक हो। जचे जेंया करो। म्हे तो थे करोगा जैया त्यार हा।

मोतीलाल—(सबने) आपलोग बाबु हो, बडा आदमी हो। दया करकर यो बेडो पार लघावो।

गोपीराम—(घमडीलालने) अच्छा तो म्हे लोग इब फई पर कोई रकम को जोर कोनी देवागा। थाने जितणु माल डिलिवर दीणु होय आपणो गुदाम पर आडर काट दियो सो सगना जगा आपेई ढीला हो ज्यावेंगा। सगलो सोदो सेटल होता बारई का,नी लागेगा।

घमडीलाल—या तो ठीक। पण आजका भावमें बो सगलो सोदो सेटल हो ज्यावेगो तो सो बयु देय लेय कर, रुपया दश लाख डिफरेन्सका दीणने चायेगा। पीछे, दश पाच लाख और होणेसें आगेने को काम चलु होगो।

गोपीराम—खैर कोई बात ना। आगेने प्रतिज्ञा करो मैं गरब गुमान नही करुगो, गरीबा पर दया राखु'गो। किसी को अपमान नही करु गो।

(घमडीलाल प्रतिज्ञा कर लेवे है। गोपीराम बीस लाख को चीक काटकर दे देवे है)

घमडीलाल—(चीक लेकर) भगवान थारो भलो करो।

मबै डुबताने ऊबार लियो मैं जलम भर थारो गुण नईं भूलुंगो।

गोपीराम—देखो, यो बेर विरोदई सोवयाने खराब करै है। आदमीने सब सें मिलकर रैणुं। यो नदी नाव सजोग हो गयो है सो मिल जुलकारई रैणेमें भलाई है। कह्यो बो है—

"तुलसी या ससार में, भाति भाति के लोग।
सबमें रल मिल चालिये, नदी नाव सजोग॥"

घमडीलाल—मेरी तो आगैने कोई रकम की सिकायत सुणों तो एक कानो की मेरी मूछ काट लियो।

रगलाल—बस तो। सुख पावोगा।

भोलाराम—इब तो च्यार फारम आपणा एक होगया। सगला काम मिल जुलकार होता रहैगा।

मोतीलाल—च्यारवाका नाम तो म्हाने बी बतावो? ज्यु आगैने मैगे तो वर्षी रवै।

मोजीराम—ल्यो म्हे बतावां। सुणो—

(१) बाबु गोपीरामजी मुरलीधर।

(२) बाबु रगलालजी रामगोपाल।

(३) बाबु भोलारामजी भींवराज।

(४) बाबु घमडीलालजी गिरधारीलाल।

मोतीलाल—भोत ठीक।

मोजीराम—जो हुकम (त्यारी करे है)

(इतणामें हरीप्रसाद आवे है)

गोपीराम—हरीप्रसाद एक काम कर। म्हे आज देश जाणेंको मन सुभो कर लियो है, सो इबड़े जाकर आपणु सगलो असबाब बिरखमें लगायाव और एक सिकन को डब्बो नारनोल को रिजाब करायाव।

हरीप्रसाद—वसी के। चाण चुकीई के ध्यान में आगई? आच्छ्यो मैं असबाब लेकार जाऊं हु। अंने बिरखमें लगा कर, गाडी रिजर्व कराकर इबो आऊ छु। दो जमादाराने साथ ले ज्याऊं हुं जिको माल लगाता रहेंगा मैं, झटपट गाडी रिजाब कराकर पीछो आन्याऊ गो।

गोपीराम—ठीक है।

(हरीप्रसाद,जमादाराने तथा असबाब लेकार इष्टेशनपर जावें है)

लिछमी—(गोपीरामने) चालो अँ बखत दो एक काम बी आपांने करणां है, जिका बो हो ज्यायगा। पीछे मजेसें मठेई रवागा। अठे तो रामारी मादगी सेंई पीडो कोनी छुटे।

गोपीराम—या बात ठीक है। आपणी नई हेलीको नागल बी हो ज्यायगो। और जसरापुर का सकट मोचन श्रीहनुमानजो के एकबर चालणु है जिको मेलो पोह सुदी १५ को नजीक आगयो सो जठे बी चाल्यावागा। क्युंकि पेला पोत कलकत्ते जिके दिन आया जणा मनमें या प्रतिज्ञा

करी थी कि आपणु भाग परताप चोखो हो ज्यावैगो तो म्हाराज कै मेले में जरूर सामिल होवागा सो वा प्रतिज्ञा भी पूरी हो ज्यावैगो।

सुरली—काकोजी। जसरापुर को मेलो किसोक होय है। मनै वी बतावो?

गोपीराम—वेटा! भोत चोखो होय है। भोत २ रकम का तमाशा हुया करैं है। कई किसम की दुकानां लग्या करे है। भोतसा आदमी भेला हुया करैं है। बालाजीकी मूर्ती भोत शोवणो, बडी सारी है, जैंका दरशण सैं भोत आनन्द आया करे है।

मोजीराम—श्रोर देखी है क ना? मन्दर में एक कानो बाबा भोलासिभूकी मूर्ति किसोक सागो पाग है, जाणु साच्याई मु सैं बोल पडैगो।

- सुरली—जणा तो इब कै मेलामैं जसरापुर मैं बी चालुंगो।

गोपीराम—तनै तो जरूरई ले चालागा। कह्या करैं है—"गुड बिना किसो चोथ।"

(इतार्णमें हरीप्रसाद श्रावें है)

हरीप्रसाद—इस्टेशन को काम तो सगली त्यार है। इब थारी बोली के सेला है?

गोपीराम—म्हे बी त्यार हा।

मोजीराम—म्हारो सीतारामजी बी त्यार है।

गोपीराम—इब सगला जणा जीम जुठ कर त्यार हो